मनोरंजक कहानियाँ



मनोरंजक कहानियां

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण—1955
द्वितीय संस्करण—1957
तृतीय संस्करण—1964
चतुर्थ संस्करण—माघ 1891 (फरवरी 1970)
पंचम संस्करण—फाल्गुन 1899 (मार्च 1978)
षष्ठम संस्करण—चैत्र 1911 (मार्च 1989)
पुनर्मुद्रण—आषाढ़ 1912 (जुलाई 1990)

मूल्य : 18 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110 001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400038
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- एल. एल. ए. आडीटोरियम, 736 अन्नासलै, मद्रास-600002
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001
- 10-बी, स्टेशन रोड, लखनऊ-226019
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004

भारत मुद्रणालय, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित।

भूमिका

'मनोरंजक कहानियां' के इस संग्रह में चुनी हुई 21 सुंदर सचित्र कहानियां हैं। कुछ कहानियां लोक-कथाओं के रूप में भी प्रचलित हैं। कहानियों की भाषा सरल और मुहावरेदार रखी गई है, ताकि कथोपकथन का रस बना रहे।

इस संग्रह की कुछ कहानियां हमारे बाल लेखकों द्वारा लिखी गई थीं। बच्चों के लिए केवल मनोरंजक साहित्य तैयार करना ही हमारा ध्येय नहीं रहा, अपितु बाल तथा अहिन्दी भाषी लेखकों को प्रोत्साहन देने की भी हम भरसक चेष्टा करते रहे हैं।

बच्चों को यदि कोई बात सरल और दिलचस्प ढंग से सिखाई जाए, तो वह जल्दी ही असर करती है। बच्चों और प्रौढ़ों की पढ़ने में रुचि जाग्रत करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि हम उन्हें ऐसा साहित्य पढ़ने को दें, जो उनकी जानकारी बढ़ाने के साथ उनका पूर्ण रूप से मनोरंजन भी करे। लोक-कथा माला का यह तीसरा पुष्प 'मनोरंजक कहानियां' अपने इस ध्येय को पूरा करने में सफल रहा है और हमें यह षष्ठम संस्करण प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है।

डा० श्याम सिंह 'शशि'
निदेशक

विषय-सूची

तीसमारखां

एक गांव में एक जुलाहा रहता था। उसके हाथ-पांव तो थे खूब दुबले-पतले, नाक टेढ़ी-सी, पर सिर खूब बड़ा था, जिस पर कि वह एक बड़ा-सा पग्गड़ बांध लेता था। इस प्रकार उसका हुलिया बिगड़ा रहता था। लोग उसे मजाक में सींक पहलवान कहा करते थे। काम में तो सींक पहलवान बहुत सुस्त था पर बातें बनाने में वह बड़ा ही तेज था। अपनी पतली कमर मटका कर, हाथ मटकाता हुआ जब वह अपनी वीरता की शेखियां मारता तो उसकी बातें सुन-सुन कर लोग हंस-हंस कर लोट-पोट हो जाते।

एक दिन जब वह एक चादर बुन रहा था, उसकी मां ने उसके खाने के लिए गुड़ और रोटी पास में धर दी। गुड़ के कारण रोटी पर मक्खियां बार-बार आकर बैठने लगीं। तंग आकर गुस्से में जुलाहे ने ज्योंही एक झापड़ चलाया तो रोटी पर तुरंत तीस मक्खियां मर गईं। यह देखकर जुलाहा तो फूला न समाया। उसने देखा कि सामने गांव के चार-पांच व्यक्ति बैठे हुए हैं, बस रोटी लेकर वह वहां पहुंचा। जुलाहे को इतना प्रसन्न देख एक मनचले ने पूछा—क्यों भाई सींक पहलवान! आज क्या बात है जो इतने खुश दीख रहे हो?

जुलाहे ने भिनभिना कर कहा—देखो जी, हमें तुम सींक पहलवान मत कहा करो। हां, हम आखिरी बार कहे देते हैं, फिर अच्छा न होगा।

दूसरे व्यक्ति ने ठिठोली करते हुए पूछा—तो फिर क्या कहा करें?

जुलाहे ने हाथ की रोटी जिस पर गुड़ की डली रखी थी, आगे बढ़ा कर दिखाते हुए कहा—क्या समझा है आप लोगों ने मुझे? देखिए हम कोई ऐसे वैसे नहीं हैं। पूरे तीसमारखां हैं। एक ही झापड़ में तीस जीव मार कर रख दिए। कोई ऐसा कर सकता है?

एक मसखरे ने गम्भीर होकर कहा—वाह, भाई वाह, आज तो सींक पहलवान ने गजब ही कर दिया। देखो न एक दो नहीं—एक दम तीसों को मौत के घाट उतार दिया।

दूसरा बोला—और वह भी एक ही वार में!

तीसरा बोला—और एक हम हैं कि इन मक्खियों के मारे परेशान हो जाते हैं। फिर वह जुलाहे से बोला—जाओ भाई, आज से तुम्हारा नाम तीसमारखां रख दिया।

बस उस दिन से जुलाहे के मिजाज और भी सातवें आसमान पर चढ़ गए। बात-बात पर वह अपने अड़ोस-पड़ोस से उलझ पड़ता कि—क्या समझा हुआ है मुझे? मैं कोई ऐसा वैसा नहीं हूं जो तेरी धौंस सह लूंगा। जरा जुबान सम्भाल कर बोला कर। मैं तीसमारखां हूं। कहीं गुस्सा आ गया तो हाथ चला बैठूंगा, फिर तेरी हड्डी-पसली का भी पता नहीं चलेगा।

गांव के छोकरे उसका खूब मजाक बनाते। उसे आते देख कर कह उठते—भाइयों, जरा बच कर रहना, तीसमारखां आ रहे हैं।

उनकी बात सुन कर तीसमारखां सोचता, लोग-बाग सचमुच में मुझ से दबते हैं। वह सिर पर पगड़ सम्भालता हुआ उनके पास आ जाता और कहता—भाइयों, क्या बताऊं—आस-पास के गांव में तो हमारे जोड़ का कोई वीर है नहीं।

एक दिन गांव के एक पड़ोसी भाई ने जुलाहे से कहा—भाई तीसमारखां ! तुमने इतनी शोहरत कमा ली है। अब तो तुम्हें अपनी किस्मत आज़माने के लिए किसी राजदरबार में जाना चाहिए। सुनते हैं, कोई-कोई राजा महराजा बड़े गुणग्राही होते हैं। भगवान ने चाहा तो तुम कुछ ही दिनों में सिपहसालार बना दिए जाओगे। बात भी ठीक है, एक झापड़ में तीसों को मार गिराना तुम्हारे जैसे तीसमारखां का ही काम था।

यह बात तीसमारखां को जंच गई। वह यह नहीं समझा कि यह पड़ोसी मुझे गांव से टरका कर मेरा मकान हथियाना चाहते हैं। बस दूसरे ही दिन वह अपना थोड़ा-बहुत सामान एक गठरी में बांध कर चल दिया। चलते-चलते एक देश में पहुंचा और राजदरबार में हाजिर हुआ। परिचय पूछे जाने पर वह बोला—महाराज ! मैं वीर शिरोमणि तीसमारखां हूं। एक ही झापड़ में मैंने तीस को मार गिराया है। हजूर के दरबार में कुछ उम्मीद लेकर हाजिर हुआ हूं।

राजा ने पूछा—तुम क्या काम करोगे ?

तीसमारखां बोला—महाराज ! मैं मामूली काम करना तो अपनी शान के खिलाफ समझता हूं। जहां आप की सेना असफल रहे, वहां मुझे भेजा जाए। फिर देखिएगा कि मैं क्या-क्या करतब दिखाता हूं।

उसकी बातचीत से राजा का बड़ा मनोरंजन हुआ। उन्होंने सोचा—ठीक है। चलो जब तक यहां इसके लायक कुछ काम नहीं है, इसकी बातचीत से ही सब का मनोरंजन हुआ करेगा।

कुछ ही दिनों में तीसमारखां राजा का बड़ा मुंहचढ़ा मुसाहिब बन गया। जब कोई काम आ पड़ता, तीसमारखां दूसरों पर हुक्म चला देता। इससे राजा का मंत्री उससे बहुत चिढ़ने लगा था। एक दिन मंत्री ने तीसमारखां को अपने घर खाने पर बुलाया। इतने में उसे खबर मिली कि राजा का एक हाथी पागल हो गया है और उसने नगर में बहुत-से सिपाहियों को भी मार डाला है। मौका देख कर मंत्री ने राजा से कहा—महाराज ! हाथी ने तो सेना को भी कुचल दिया। वह किसी के भी काबू नहीं आ रहा है। आप तीसमारखां को उसे मारने के लिए भेजें।

राजा को यह बात जंच गई।

तीसमारखां ने सोचा—बस अब तो यहां से भाग चलने में ही खैर है। उसने थाली में से चार मीठी रोटियां उठा कर जल्दी से एक थैली में डालीं और बोला—अच्छा मंत्रीजी चलता हूं, हाथी को मार कर ही रोटी खाऊंगा।

मंत्रीजी ने कहा—हां और दो रोटियां ले लीजिए।

असल में उन रोटियों में था जहर। मंत्री तीसमारखां को अपने मार्ग का रोड़ा समझता था। राजा का मुंहचढ़ा होने के कारण वह कई बार भरे दरबार में मंत्री का मजाक उड़ा चुका था। उसने सोचा किसी तरह इसे खत्म किया जाए। इसलिए मीठी रोटियों में जहर डलवा कर उसने तीसमारखां को जीमने के लिए बुलाया था। पर उसके रोटी खाने से पहले ही हाथी ने गड़बड़ मचा दी।

इधर रोटी लेकर तीसमारखां जैसे ही सड़क पर आया कि दूसरी ओर से वह पागल हाथी आ पहुंचा। हाथी को देख कर अपनी जान की खैर मनाता हुआ तीसमारखां सिर पर पांव रख कर भाग चला।



हाथी को देखकर अपनी जान की खैर मनाता हुआ तीसमारखां सिर पर पांव रखकर भाग चला।

आगे-आगे तीसमारखां था और पीछे-पीछे हाथी। कुछ दूर भागते-भागते तीसमारखां के हाथ से रोटियों की थैली गिर पड़ी। गुड़ और घी की गंध पाकर हाथी रुक गया और उसने एक ही कौर में वे छः की छः रोटियां खा लीं। रोटियों में बहुत तेज विष था। खाते ही हाथी चक्कर खाकर गिर पड़ा और मर गया। हाथी को गिरते देखकर तीसमारखां लौट पड़ा और जब उसे पूरी तौर से यकीन हो गया कि हाथी मर गया है तो वह उस पर चढ़ कर बैठ गया। इतनी देर में नगर में यह खबर फैल गई कि हाथी को तीसमारखां ने मार गिराया है। हाथी के आसपास सब लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। राजदरबार में पहुंच कर तीसमारखां ने खूब शेखियां मारीं—हजूर! मैंने हाथी को बड़ी तरकीब से मारा है। पहले तो इसे भगाता-भगाता मैं शहर से बाहर ले गया। उसके बाद मैंने जैसे ही डपट कर उसे रुकने को कहा, तो सहमकर

वह वहीं रुक गया। फिर मैंने दो कंकड़ी मारकर उसे अंधा कर दिया। बाद में उसकी सूंड पकड़कर घुमा कर जमीन पर जो पटका तो चक्कर खाकर वह चारों खाने चित्त गिरा।

यह सुन कर सब लोगों पर तीसमारखां का बड़ा रुआब छा गया। राजा ने उसे अपनी सेना का सिपहसालार बना दिया। कुछ दिन बाद राज्य में एक आदमखोर शेर ने बहुत उत्पात मचा दिया। शेर के डर से शाम होते ही सब लोग अपने-अपने घरों के दरवाजे बंद करके बैठ जाते थे। मौका देख कर एक दिन मंत्री ने राजा से कहा—महाराज! इस आदमखोर शेर के कारण सब लोगों की बड़ी मुसीबत हो रही है। उसने हमारी सारी फौज को परेशान कर दिया है। उसके मारने का कुछ प्रबंध होना चाहिए।

यह सुन कर राजा ने तीसमारखां की ओर देख कर कहा—तीसमारखां जी, आप जैसे बहादुर के होते हुए राज्य में एक शेर सिर उठा जाए, यह तो बड़े अफसोस की बात है!



शेर को यह धोखा हुआ कि हो न हो यह मुझसे भी बली वही 'टपका' है जिससे इन्सान डरता है और जो अब मुझ पर चढ़ बैठा है।

बस तीसमारखां को शेर मारने का काम सौंप दिया गया।

घर आकर तीसमारखां बड़े सोच में पड़ा कि अब क्या करूं? शेर का नाम सुन कर ही उसकी घिग्घी बंध जाती थी—उसको मारने की बात तो कल्पना से परे थी। और कोई रास्ता न देख कर उसने सोचा कि कुछ रात बीतने पर चुपके से अपनी गठरी-मुठरी लेकर यहां से निकल चलूंगा। जब रात को सब सो गए तो तीसमारखां चुपके से घुड़साल में गया और एक छोटा-सा टट्टू खोल लाया। वैसे तो वहां बड़े-बड़े घोड़े खड़े थे पर फौजी घोड़े पर चढ़ना तीसमारखां के बूते की बात नहीं थी। बस टट्टू पर जीन कस कर तीसमारखां ने सोचा कि शेर तो रात को शहर में आता है, इसलिए जंगल की राह पकड़ना ठीक होगा। जाड़े के दिन थे। ठंडी हवा चल रही थी उस पर रास्ते में बूंदाबांदी शुरू हो गई। रास्ते में एक झोपड़ी देखकर तीसमारखां ने सोचा कि जब तक पानी थमे, यहीं रुकना चाहिए। बस उसने टट्टू को तो बाहर छोड़ दिया उसकी काठी आदि लेकर खुद झोंपड़ी में चला गया। उस झोंपड़ी में एक बुढ़िया रहती थी। संयोग से उस दिन शिकार की टोह में शेर झोंपड़ी के दरवाजे पर ही आकर दुबक कर बैठ गया। बातचीत में बुढ़िया ने उससे कहा—भैया, तुम इतनी रात हुए घर से निकले हो, रास्ते में तो शेर का बड़ा डर है।

यह सुनकर, शेखी मारते हुए तीसमारखां बोला—मैं तीसमारखां हूं, शेर से नहीं डरता। मुझे तो केवल टपके (बरसात) का डर है।

बाहर बैठा शेर यह बात सुन रहा था। तीन पहर रात बीत चुकी थी। इतने में तीसमारखां को याद आया कि मैं अपनी रुपयों वाली थैली तो घर ही भूल आया हूं। उसने सोचा क्यों न दिन निकलने से पहले जल्दी से जाकर अपनी थैली ले आऊं। बस वह जल्दी से काठी उठाकर बाहर आया, और दरवाजे पर ही टट्टू को खड़ा पाकर उस पर काठी कस दी और दे चाबुक, दे चाबुक मारता हुआ उसे नगर की ओर भगा लाया। इतने में दिन निकल आया था। तीसमारखां ने सोचा कि आज तो चुप मार जाओ, कल चलेंगे। टट्टू को अस्तबल में ही बांध दिया जाए ताकि किसी को मेरे जाने का पता ही न चले। वह टट्टू को अगाड़ी और पिछाड़ी बांध कर अस्तबल में बांध आया और खुद घर आकर सो गया।

असल में वह टट्टू नहीं शेर था, जिस पर तीसमारखां ने जीन कसी थी। अचानक अपने ऊपर जीन कसकर किसी को सवार होते देख शेर को यह धोखा हुआ कि हो न हो यह मुझसे भी बली वही 'टपका' है, जिससे इन्सान डरता है और जो अब मुझ पर चढ़ बैठा है। और चाबुक खाकर तो शेर के होश-हवास ही गुम हो गए। इधर तीसमारखां ने अब तक कभी शेर देखा नहीं था। वह उसे टट्टू के धोखे में अस्तबल में निडर होकर बांध आया।

सुबह अस्तबल में घोड़ों की हिनहिनाहट और फड़फड़ाहट सुन लोग उधर गए तो देखकर हैरान हो गए कि उनके बीच में शेर बंधा हुआ है, और इसलिए यह सब गड़बड़ मची हुई है। बस फौरन शेर को मोटे-मोटे रस्सों से बांध कर पिंजड़े में डाल दिया गया, और तीसमारखां की जय के नारे लगाते हुए जुलूस निकाला गया। अपने घर की एक खिड़की के पीछे छिप कर तीसमारखां ने सब बात जान ली। बस फिर क्या था? तीसमारखां तीर-तलवार कसकर दरबार में पहुंचा और बोला—महाराज! शेर के संग पहले तो मैंने खूब कुश्ती की, फिर सोचा

इसे मार कर नहीं, जीवित ही पकड़ कर ले चलूं तो ठीक है। बस इसकी पीठ पर चढ़ कर मैंने दोनों कान पकड़ लिए और सीधा अस्तबल में लाकर ही दम लिया।

यह सुनकर राजा ने तीसमारखां का ओहदा और बढ़ा दिया और तनख्वाह भी दुगुनी कर दी। इसी प्रकार कुछ दिन तो चैन से बीत गए पर फिर राज्य पर एक नई मुसीबत और टूट पड़ी। राज्य के एक पड़ोसी राजा ने भारी सेना लेकर देश पर चढ़ाई कर दी। तीसमारखां घर बैठा अपनी सेना को लड़ाई करने का हुक्म देता रहा। शत्रु की सेना बेशुमार थी, उसने राजा की अधिकांश सेना काट कर धर दी। सारे देश में त्राहि-त्राहि मच गई। जब बचने की कोई उम्मीद नहीं रही तो राजा ने तीसमारखां से कहा—तुम्हारे रहते हम पर यह मुसीबत आए यह तुम्हारी शान के खिलाफ है सेनापति जी! अगर तुम किसी प्रकार इस शत्रु को हरा कर हमारे राज्य की रक्षा कर सको तो मैं राजकुमारी से तुम्हारा विवाह कर दूंगा।

इतने दिन दरबार में रह कर तीसमारखां को भी कुछ अक्ल आ गई थी। उसने सोचा अगर अब की बार भी किस्मत ने साथ दिया तो उम्र भर चैन की बंसी बजाऊंगा। फिर उसने राजा से कहा—मुझे एक बढ़िया घोड़ा दें और राज्य भर में जितनी भेड़ें हैं, उन्हें जैसा मैं कहूं उसी प्रकार तैयार करवा दिया जाए।

राजा ने हैरानी से पूछा—तो क्या तुम बिना सेना और हथियारों के लड़ोगे?



बड़ी धूम-धाम के साथ तीसमारखां का राजतिलक हुआ और राजा की बेटी से उसका विवाह हो गया।

तीसमारखां बोला—महाराज! आपकी सेना और हथियार कितने असफल रहे हैं, यह तो आपने देख ही लिया। मैं आपके शत्रु की सेना को आज रात को ही गाजर की तरह काट कर रख दूंगा। बस जैसे मैं कहूं वैसा किया जाए। मेरे लड़ने का ढंग अनूठा है।

तीसमारखां के कहे अनुसार सब भेड़ों के सिरों पर एक-एक जलती मशाल टिकाकर बांध दी गई। मुखिया भेड़ को आगे कर दिया गया। उनके पीछे एक घोड़े पर तीसमारखां ने खुद को बंधवा लिया, क्योंकि उसे डर था कि कहीं घोड़ा गिरा न दे। अगर मान लो चाल सफल नहीं हुई तो कम से कम घोड़े को चाबुक मार कर वह लड़ाई के मैदान से भाग कर अपनी जान तो बचा सकेगा। जब सब तैयारी हो गई तो आधी रात को, जब कि शत्रु की सेना बेफिक्र होकर सो रही थी, भेड़ों के सिर पर मशाल जलाकर उनको शत्रुओं के डेरों की ओर हांक दिया गया। अगली वाली भेड़ जिधर को चल पड़ी, सारा झुंड ही उधर को सिर हिलाता हुआ चल दिया और पीछे-पीछे तीसमारखां का घोड़ा चला। अपने डेरे की ओर असंख्य मशालों को बढ़ते हुए देख नींद से अचानक उठे शत्रुओं ने समझा कि हम पर हमला हो गया है। मशालों के नीचे अंधेरा था, इस कारण उन्हें भेड़ें दिखाई नहीं दीं। वे घबड़ा कर एक-दूसरे पर ही टूट पड़े। इधर भेड़ों में भगदड़ मच गई। उनकी मशालों से डेरों में आग लग गई। चारों ओर मार-काट का हो-हल्ला सुन कर घोड़ा भी भागने लगा। इस भगदड़ में तीसमारखां ने एक सूखे बबूल का तना पकड़ लिया। पेड़ उखड़ गया। घोड़े की पीठ पर उस बबूल को रख कर तीसमारखां पेड़ की ओट में सिमट कर बैठ गया। अब शत्रु सेना ने जितने तीर और बर्छे मारे सब पेड़ के तने में जाकर गड़ गए। इधर पेड़ की जड़ और कांटेदार टहनियों से टकरा कर बहुत-से शत्रु मारे गए। इस प्रकार सुबह होने तक शत्रु की सारी सेना तबाह हो गई।

दिन उगने पर राजा और प्रजा सब के सब यह देख कर हैरान थे कि शत्रु के डेरे जले पड़े हैं और मैदान में विरोधी दल का एक भी सिपाही जीवित नहीं बचा। राजा ने पूछा—तीसमारखां जी! भला रात को बिना हथियार के आप कैसे लड़ते रहे?

तीसमारखां बोला—महाराज! हमारे जैसे वीरों को हथियार की जरूरत नहीं होती। मैंने पेड़ का तना ही उखाड़ लिया था और उसी को गदा बनाकर शत्रुओं के सिर फोड़ डाले। विश्वास न हो तो देख लें इस पेड़ की दशा। तीर और भालों की चोटों से पेड़ छलनी हुआ पड़ा है।

चारों ओर 'तीसमारखां की जय! सिपहसालार की जय!' की आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। राजा ने तीसमारखां को सम्मानित करने के लिए दरबार किया और कहा—तीसमारखां जैसे वीर इस राज्य में न कभी हुए, न होंगे। उनकी बहादुरी से ही हम यह लड़ाई जीत सके हैं। इसलिए शत्रु देश का राज्य इन्हीं को इनाम में दिया जाता है।

इसके बाद बड़ी धूमधाम के साथ तीसमारखां का राजतिलक हुआ और राजा की बेटी से उसका विवाह हो गया। भविष्य में जब कभी लड़ने का मौका आया, तीसमारखां ने यही कह कर बात टाल दी—लड़ाई लड़ना राजाओं का काम नहीं है, राजा तो बैठकर हुकूमत करते हैं। लड़ना-मरना, प्रजा का काम है।

परमिट की शक्कर

जब बाजार में शक्कर बिकनी बंद हो गई, तो एक दिन रीछी रानी बोली—मैं तो गुड़ खाते-खाते ऊब गई। कितने दिन बीत गए, शक्कर देखने को भी नहीं मिली। जब देखो तब गुड़ के ढेले उठा लाते हो। भला बिना परमिट के कौन शक्कर दिए देता है ? तुम इतना भी नहीं कर सकते कि ज़रा कंट्रोल के दफ्तर तक चले जाओ, और एक परमिट बनवा लाओ।

रीछू बाबू ने मुस्करा कर कहा—तो गुड़ कौन-सा बुरा होता है ? शक्कर से भी अधिक मीठा और मज़ेदार—एक ढेला चबा लो, तो मुंह और पेट मिठास से भर जाते हैं।

रीछी रानी ज़रा जोर से बोली—मैं कब कहती हूं कि गुड़ बुरा होता है। परंतु एक चाज खाते-खाते भी तबीयत ऊब जाती है। सुना है, सियारचंद कंट्रोल-दफ्तर का बाबू है, और परमिट बनाता है—वही तुम्हारा पुराना मित्र। जरा चले जाओ न उसके पास, वह तो तुम्हें देखते ही परमिट बना देगा।

रीछू बाबू ने सर खुजाते-खुजाते कहा—जाने को तो मैं उसके पास अभी चला जाऊं, परंतु तुम उसे जानती नहीं। वह अव्वल नम्बर का लालची और बदमाश है। बिना पैसा लिए कभी किसी का काम नहीं करता। मुझे देखते ही टालमटोल कर देगा। नतीजा यह होगा कि मैं उससे लड़ पड़ूंगा, और बैठे-ठाले झगड़े में फंस जाऊंगा।

रीछी रानी बिगड़ कर बोली—न गए, न आए; लगे यहीं बैठे-बैठे बहाने गढ़ने। भला वह टालमटोल कैसे कर देगा ? आखिर सरकार उसे तनख्वाह किस बात की देती है ? चाहे इस कान सुनो, चाहे उस कान—इस तरह की बातें बनाने से काम न चलेगा। यदि आज शक्कर का परमिट बनवाकर न लाए, तो मैं शाम को खाना भी न पकाऊंगी। समझे ?

अब रीछू बाबू क्या जवाब देते ? घुर-घुर करते चले, और कंट्रोल के दफ्तर में जा पहुंचे। उनको देखते ही बाबू सियारचंद मुस्करा कर बोले—आइए-आइए रीछू बाबू ! खैरियत तो है ? कहिए कैसे आना हुआ ? वह कुर्सी ले लीजिए न।

रीछू बाबू कुर्सी पर बैठते-बैठते बोले—थोड़ी-सी शक्कर चाहिए। कोई तकलीफ न हो, तो एक परमिट बना दीजिए।

बाबू सियारचंद ने आंखों पर चश्मा चढ़ाते-चढ़ाते कहा—अभी लीजिए ! परंतु यह तो बताइए कि आपको शक्कर खाने के लिए चाहिए या पीने के लिए ?

रीछू बाबू ने पूछा—क्या पीने के लिए भी कोई शक्कर मिलती है ?

बाबू सियारचंद ने अगले दांत बाहर निकालते-निकालते जवाब दिया—जी हां ! बिल्कुल पानी के समान पतली ! सरकार ने अभी-अभी निकाली है। इतनी मजेदार होती है कि

बस, पूछिए मत। यदि आप एक बूंद भी चख लेंगें, तो फिर कभी भूल कर भी सूखी शक्कर का नाम न लेंगे।

रीछू बाबू खुश होकर बोले—बस-बस, आप तो मुझे इस नई शक्कर का ही परमिट दे दीजिए। मज़े से चुस्कियां ले-लेकर पिऊंगा, और आपके गीत गाऊंगा!

बाबू सियारचंद ने चट-पट कागज का एक टुकड़ा लिखा, रीछू बाबू की तरफ़ बढ़ाया और कहा—लीजिए, एक शीशी लेकर डाक्टर बानरचंद के पास चले जाइए, और इस नई शक्कर के मज़े लूटिए।



रीछी रानी मुंह बनाकर बोली—शीशी? भला शीशी की क्या जरूरत! लोग शक्कर रूमाल में लाते हैं, थैली में लाते हैं, शीशी में शक्कर लाने की बात तुम्हारे मुंह से सुनी!

रीछू बाबू कुछ घबराकर बोले—डाक्टर बानरचंद? वह शक्कर देंगे भी? टालमटोल तो न करेंगे?

सियार बाबू ने सर मटका कर जवाब दिया—कैसी बातें करते हैं आप? देंगे क्यों नहीं? हजार बार देंगे, और मुफ्त देंगे। सरकारी हुक्म है कि दिल्लगी? आप जाइए तो सही।

यह सुनते ही रीछू बाबू मारे ख़ुशी के उछल पड़े, और बोले—मुफ्त ! अहा हा मुफ्त ! सियार बाबू यह आपने बड़े मजे की बात सुनाई ! सच मानिए, मेरी तबीयत बाग़-बाग़ हो गई ! बस, अब रोज़ चुस्कियां ले लेकर शक्कर पिऊंगा, और आपके गीत गाऊंगा ।

इसके बाद रीछू बाबू झूमते-झामते घर लौटे। उनको देखते ही रीछी रानी झट से बोल उठीं—ले आए परमिट ? देखो सच कहना, अब तो मिल जाएगी न हम लोगों को शक्कर ?

रीछू बाबू ने अकड़ कर कहा—हां-हां, ले आया। यह देखो न ? तुम मुझे समझती क्या हो ?

रीछी रानी हंस कर बोली—मैंने कहा था न ? परन्तु तुम तो यहीं बैठे-बैठे बहाने गढ़ रहे थे, बाबू सियारचंद ने टालमटोल तो नहीं की ?

रीछू बाबू ने तन कर जवाब दिया—टालमटोल ? अव्वल नम्बर का लालची और दुष्ट है। भला वह बिना टालमटोल किए रह सकता था ? परन्तु मैं कब उसका पीछा छोड़ने वाला था, बिगड़ उठा—सीधी तरह परमिट बनाना हो, तो बना दो, नहीं तो सरकार में रिपोर्ट कर दूंगा। आखिर उसने परमिट दिया और सर झुका कर दिया। बस, अब झटपट एक बड़ी-सी शीशी मेरे हवाले करो, तो मैं दौड़ कर शक्कर ले आऊं।

रीछी रानी मुंह बनाकर बोली—शीशी ? भला शीशी की क्या जरूरत ? लोग शक्कर रूमाल में लाते हैं, थैली में लाते हैं, शीशी में शक्कर लाने की बात आज तुम्हारे मुंह से ही सुनी है !

रीछू बाबू ने मुंह बना कर कहा—तुम जानती-समझती तो कुछ हो नहीं, बस, बेकार पट-पट करने लगती हो ? सरकार ने एक नई तरह की शक्कर निकाली है—पानी के समान पतली शक्कर, जो चुस्कियां ले लेकर पीने के काम आती है ! अब खड़ी-खड़ी सुनती क्या हो, शीशी लाओ न !

इस तरह शीशी लेकर रीछू बाबू डाक्टर बानरचंद के पास पहुंचे। उनको देखते ही डाक्टर बानरचंद मुंह मटकाकर बोले—ओहो ! रीछू बाबू हैं—आइए-आइए ! कहिए, खैरियत तो है ?

रीछू बाबू ने कुर्सी पर बैठते-बैठते कहा—बस, एक शीशी शक्कर दे दीजिए। यह लीजिए परमिट, अभी-अभी कंट्रोल-दफ्तर से लाया हूं, बाबू सियारचंद ने दिया है। मजे से चुस्कियां ले-लेकर पीऊंगा, और आपके गीत गाऊंगा ।

डाक्टर बानरचंद परमिट पढ़ते-पढ़ते मुस्करा कर बोले—अभी लीजिए। लाइए, शीशी इधर दीजिए ।

रीछू बाबू ने शीशी आगे बढ़ाते-बढ़ाते सवाल किया—सुना है, डाक्टर साहब, यह शक्कर बड़ी मजेदार होती है ?

डाक्टर बानरचंद ने शीशी लेते-लेते जवाब दिया—बस पूछिए मत, बड़ी मजेदार होती है। एक बूंद चख लीजिए घंटों मुंह में मिठास भरी रहेगी। हाथ कंगन को आरसी क्या—देखिए न।

यह कहते-कहते डाक्टर बानरचंद ने एक शीशी खोली, और उसमें से दो-तीन बूंदें रीछ बाबू के मुंह में गिरा दीं। रीछू बाबू मारे खुशी के नाचते-नाचते बोले—अहा हा ! अहा हा ! बड़ी मज़ेदार शक्कर है यह। मेरी तो तबीयत मस्त हो गई, बस, पूरी शीशी भर दीजिए, डाक्टर...पूरी शीशी।

डाक्टर बानरचंद ने शीशी भर कर रीछू बाबू को देते-देतें कहा—लीजिए और जब तबीयत चाहे, आकर ले लिया कीजिए।

रीछू बाबू शीशी लेकर चले, तो मारे खुशी के उनके पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे। घर पहुंच कर उन्होंने शीशी रीछी रानी की ओर बढ़ाई और कहा—लो, जी भरकर पियो। मुफ्त



रीछू बाबू ने कहा—बस, एक शीशी शक्कर दे दीजिए।

लाया हूं मुफ्त और डाक्टर बानरचंद ने कह दिया है कि जब तबीयत चाहे, शीशी भर ले जाया करो।

इस पर जाट ने कहा--मैंने तो सोने का अधेला दिया था, तुम मुझे दो इलायची कैसे दे रहे हो ?

इस पर दोनों में लड़ाई शुरू हो गई। आस-पास के दुकानदार और राह चलने-वाले इकट्ठे हो गए। दोनों अपनी-अपनी हांकने लगे। अन्त में लोगों ने यही फैसला किया कि भला अधेला देकर कभी कोई चादर फैलाता है ? इसलिए जाट ने सोने का अधेला दिया होगा। जब यह निर्णय हो गया तो दुकानदार को मानना पड़ा, और जाट को एक रुपये की लौंग-इलायची मिली, और चौदह रुपये नक़द मिले।



जाट एक पन्सारी की दुकान पर गया, और वहां अधेला देते हुए अपनी चादर बिछा कर बोला—लौंग और इलायचियां बांध दें।

वहां से वे एक गांव में पहुंचे तो वहां एक कुएं के पास स्त्रियां आपस में बातें कर रही थीं। उसने छिप कर उनकी बातें सुनीं। उनकी बातों से मालूम हुआ कि गांव के नम्बरदार की लड़की का आज गौना होने वाला था पर, किसी कारण से उसका दामाद न आ सका। नम्बरदार की स्त्री बड़ी चिन्तित थी।

उन स्त्रियों की बात-चीत से जाट को यह भी पता लगा कि शादी कई साल पहले हुई थी, और अब किसी को यह याद न था कि दामाद का चेहरा कैसा है। कुएं के पास की कोई स्त्री उसे गोरा बता रही थी तो कोई सांवला।

थोड़ी ही देर में जाट नम्बरदार के घर पहुंचा और बोला—मैं लड़की को विदा कराने आया हूं। दिन में इसलिए नहीं आया कि छुट्टी नहीं मिली। मेरे साथ यह मेरा नाई भी है।

दोनों की बड़ी आवभगत हुई। खाने को बहुत बढ़िया पकवान मिले और रात ही में विदाई की तैयारी होने लगी। दिन चढ़ने तक लड़की विदा कर दी गई, और साथ में बहुत-सा सामान भी दिया गया। एक गाड़ी पर लड़की और दामाद चले और नाई पीछे-पीछे चला। यों तो जाटों में घोड़ी देकर विदा करने का रिवाज़ है, पर जाट ने कहा कि उसे घोड़ी पर चढ़ने की इच्छा नहीं है।

थोड़ी दूर जाकर जाट स्वयं तो नीचे उतर पड़ा, और नाई को गाड़ी पर बैठा दिया। उसके कन्धे पर एक कम्बल भी था। गाड़ी चलने से पहियों के जो निशान बन रहे थे, वह उन्हें पीछे से कम्बल से मिटाता जा रहा था।

जिस समय जाट नम्बरदार के घर गया था, उस समय नम्बरदार नहीं था। विदा कराते समय भी नहीं था। जब वह घर लौटा तो सारा वृत्तांत सुन कर दामाद से मिलने के लिए व्याकुल होकर घोड़े पर दौड़ा। निशान मिट जाने पर भी वह जल्दी ही उस गाड़ी के पास आ गया, और जाट से पूछा कि वह कौन है?

जाट ने कहा—मैं ऐसे ही कोई हूं। यदि तुम्हें किसी की तलाश है तो पेड़ पर चढ़ कर देखो वहां से दूर तक दिखाई देगा।

नम्बरदार ने वैसा ही किया, तो वह जाट नम्बरदार के घोड़े पर सवार हो गया। वहां उसने सारा किस्सा बता दिया और बोला—तुम्हारी कई लड़कियां और हैं, उनमें से किसी को भी उस जमाई को दे देना। मुझे तुम अपना जमाई मान लो।

सब बातों को सोच विचार कर नम्बरदार ने उसकी बात मान ली और बोला—अच्छी बात है जब यह सब हो ही गया तो मैं तुम्हें अपना जमाई मानता हूं—कह कर वह घर चला गया।

छोटा भाई अपनी दुलहिन को लेकर घर पहुंचा, और बोला—भाइयो! अब आधी जायदाद दो।

भाई समझते थे कि न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी, न छोटे भाई का ब्याह होगा न उसे आधी जायदाद देनी पड़ेगी। पर वह अब शादी करके लौट आया तो उन्होंने कहा—कचहरी में चलो।

अब तीनों कचहरी को चले। रास्ते में भूख-प्यास लगी, तो उन्होंने कहा—छाछ-वाछ पी लें।

वे एक जाट के घर पहुंचे। पहले बड़ा भाई भीतर गया। जाटनी बोली—छाछ तैयार है, पर कोई वारपार की बात सुनानी पड़ेगी। न सुना पाओगे तो पांच जूते मारूंगी।

बड़े भाई ने छाछ पी ली और जूते खा लिए, मंझले भाई ने भी ऐसा ही किया। अब छोटे भाई की बारी थी। उसने छाछ पी ली तो जाटनी जूता उठा कर उसे मारने को तैयार हुई। तब छोटे भाई ने कहा—तुम जूता क्यों मार रही हो? मैं एक नहीं सौ ऐसी बात सुनाऊंगा। पर पहले अपनी इज्ज़त तो बचा लो। मैं कहीं भागा थोड़े ही जाता हूं।

जाटनी बोली—मेरी इज्ज़त को क्या हुआ।

छोटा भाई बोला—सामने के दुकानदार ने सब को गुड़ बांटा, और तुम्हारे दरवाज़े पर आकर तुम्हें सौ गालियां देकर चला गया।

गाली का नाम सुन कर जाटनी लड़ने के लिए दौड़ी हुई गई। उधर घर का मालिक जाट आया तो छोटे भाई ने कहा—दुकानदार जाटनी को बुला कर ले गया है।

इस पर घर का मालिक, बिना कुछ पूछताछ किए, जाकर जाटनी को मारने लगा। जाटनी रोती हुई आई। उधर से जाट की लड़की बाहर से आई, तो छोटे भाई ने कहा—तुम्हारे मामा जी मर गए, इसलिए तुम्हारी मां रो रही है।

इतना कहना था कि वह लड़की भी रोने लगी, और उससे पूछ कर बाकी सब घरवाले भी रोने लगे। एक फ़क़ीर आया तो उसे भी छोटे भाई ने यह कह कर रोने में शरीक करा दिया कि मांगने से दिन भर में चार आने मिलेंगे, यहां रोओगे तो आठ आने मिलेंगे।



नम्बरदार ने उसकी बात मान ली और बोला—अच्छी बात है, जब यह सब हो ही गया तो मैं तुम्हें अपना जमाई मानता हूं।

इस पर भयंकर हल्ला हुआ। जब कुछ देर तक रोना-पीटना हो गया तो लोगों ने पूछा कि आखिर बात क्या है। घर की मालकिन ने कहा कि मेरा दामाद मर गया है, और उसकी लड़की ने कहा कि मैं तो समझी कि मामा जी मर गए हैं।

जाटनी समझ गई कि यह सब छोटे भाई की बदमाशी है। तब उसने छोटे भाई से हार मानी। यहां से निकले तो बड़े भाइयों ने कहा—यह तो बड़ा चालाक है, इससे कौन पार पाएगा; इसे बिना कचहरी गए आधी जायदाद दे दो।

इस प्रकार छोटे भाई को आधी जायदाद मिल गई।

जूते में से

एक गांव में चार शेखचिल्ली रहते थे। एक बार अकाल पड़ गया और लोग भूखों मरने लगे। उन चारों ने सोचा कि यहां तो गुजारा होना मुश्किल है, परदेश जाकर कोई रोजगार करना चाहिए।

यह सोच कर वे अपना-अपना बिस्तरा बगल में दबा कर चल दिए। आगे चल कर एक जंगल पड़ा। जंगल रेहीला था। सारी जमीन रेह से सफेद ही सफेद हो रही थी। यह देख कर एक शेखचिल्ली बोला—अरे भाई, रुक जाओ। गंगा जी आ गईं। दोपहर भी हो गई है। स्नान कर लो। खाना खा-पी कर और आराम करके चलेंगे।

अन्य शेखचिल्ली बोले—हां भाई, ठीक है। भूख भी लगी है और थक भी गए हैं। आओ, नहा लें।

फिर क्या था, चारों ने कपड़े उतारे और लगे रेह में लोटने। जब नंगे शरीर में कांस चुभते तो कहते 'मछलियां काट रही हैं', कोई कहता—मगर से बचे रहना, कोई कहता—गहरे में न जाना और कोई चिल्लाता—सब साथ ही साथ रहना। इस तरह रेह में लोटते-लोटते उन्हें बहुत देर हो गई। तब एक शेखचिल्ली बोला—अरे भाई, निकलो बहुत देर हो गई। जुकाम हो जाएगा। औरों ने भी कहा—हां भाई, निकलो। तब सब निकल आए।

आकर चारों ने कपड़े पहने। इतने में एक बोला—अरे भाई, यह तो देख लो, कोई गंगा जी में डूबा तो नहीं है।

दूसरा बोला—नहीं, कोई नहीं डूबा।

तीसरा बोला—डूबता कैसे ? पानी ही कितना था ?

चौथा बोला—सब तैरना जानते हैं।

पहले शेखचिल्ली ने कहा—तैरने वाले भी डूब जाते हैं। सब एक लाइन में खड़े हो जाओ, मैं गिनूंगा। इस पर सब एक लाइन में खड़े हो गए। पहला शेखचिल्ली गिनने लगा—एक, दो, तीन और बोला—एक डूब गया, तीन ही रह गए।

दूसरा बोला—तुमको गिनना नहीं आता। तुम लाइन में खड़े हो जाओ। मैं गिनूंगा। उसने भी तीन ही गिने। इसी प्रकार तीसरे और चौथे ने भी गिन कर देखा, परतु तीन ही होते थे। उनकी गलती यह थी कि वे अपने आपको नहीं गिनते थे। जो लाइन में खड़े थे, उन्हीं को गिन लेते थे। जब उन्होंने कई-कई बार गिन कर देख लिया और तीन ही रहे, तो उन्हें निश्चय हो गया कि एक जरूर डूब गया और वे वहीं बैठ कर जोर-जोर से रोने लगे।

इतने में सामने से एक घोड़ी पर एक जाट आ गया। उन चारों को बुरी तरह रोते देख कर उसने घोड़ी की लगाम खींची और उनसे रोने का कारण पूछा। उन्होंने बताया कि हम घर से चार साथी नौकरी के लिए चले थे। यहां गंगा जी में नहाए तो हमारा एक साथी डूब गया। हम उसी के लिए रो रहे हैं।

जाट बोला—तुम तो चारों मौजूद हो।

शेखचिल्ली बोले—नहीं, चौधरी साहब! तीन हैं। हमने कई बार गिन कर देख लिया है।

जाट बोला—जरा गिनना।

तब उनमें से एक उठ कर खड़ा हुआ और गिनने लगा—एक, दो, तीन। एक, दो, तीन।

जाट उनकी बेवकूफी समझ गया और बोला—तुम सब लाइन में खड़े हो जाओ, मैं गिन कर दिखाता हूं। जब वे लाइन में खड़े हो गए तो पैर से जूता निकाला और पहले शेखचिल्ली के सिर में मार कर बोला—कहो 'एक'। शेखचिल्ली बोले—हां, 'एक'। फिर दूसरे के सिर में मारा और बोला—कहो 'दो'। वे बोले—हां, 'दो'। फिर तीसरे के सिर में मारा और बोला—कहो 'तीन'। तीसरे ने कहा—'तीन'। चौथे शेखचिल्ली के सिर में जोर से जूता मार कर जाट ने कहा—देखो यह 'चार'।

शेखचिल्ली बड़े आश्चर्य और खुशी के साथ 'चार' कहते हुए जाट के पैरों पर गिर पड़े और बोले—चौधरी साहब! चौथा आपके जूते में से निकला है। आप बड़े करामाती हैं। हम तो आप ही के साथ चलेंगे और आप ही की सेवा करेंगे।

जाट ने बहुतेरा मना किया परंतु वे उसके साथ हो लिए। जाट ने कहा—तुम एक शर्त पर मेरे यहां रह सकते हो। तुम्हें सिर्फ खाना कपड़ा मिलेगा और कुछ न मिलेगा।

शेखचिल्ली बोले—चौधरी साहब! हमें और कुछ नहीं चाहिए। हम तो आपके जूते में से निकले हैं। हम जीवन भर आपकी सेवा करेंगे।



शेखचिल्ली के सिर में जोर से जूता मार कर जाट ने कहा—देखो यह 'चार'।

डाला, वह भी बह गया और तकिया भी भीग गया। इतने में जाट आ गया और शेखचिल्ली से बोला—अब मां की तबीयत कैसी है ? ठीक है न ?

शेखचिल्ली बोला—पानी नहीं पीती। जाट ने पास जाकर देखा तो मालूम हुआ कि मां का सारा शरीर ठंडा हो गया है और न मालूम कब से मरी पड़ी है। वह शेखचिल्ली पर बहुत बिगड़ा और रोता हुआ बाहर चला गया।

थोड़ी देर बाद बाकी तीनों शेखचिल्ली भी एक गठरी में लोहे की कीलें और पत्तियां लिए आ गए। जाट ने पूछा—गाड़ी कहां खड़ी करी दी ?

शेखचिल्ली बोले—चौधरी साहब ! गाड़ी तो आपकी परमधाम को चली गई। फूल हम बीन लाए हैं।

जाट उनका बेतुका उत्तर न समझ सका और क्रोध से लाल होकर बोला—क्या मतलब है तुम्हारा ? ठीक-ठीक क्यों नहीं बताते ?

शेखचिल्ली बोले—मतलब यही है कि गाड़ी जल गई और उसकी हड्डी-पसली जो बाकी रह गई थी, हम ले आए हैं।

जाट बोला—गाड़ी कैसे जल गई ?

शेखचिल्ली बोले—चौधरी साहब ! सुनिए। आपकी आज्ञानुसार हम गाड़ी को जंगल में ले गए थे। वहां कांस के पूलों से उसे चकाचक भर दिया। परंतु जब बैल जोड़ कर चलने लगे तो गाड़ी चर्र-चर्र करने लगी। हमने सोचा, इसके पेट में दर्द हो रहा है, इसलिए कराह रही है। शायद पानी पिलाने से कुछ शांति मिले, यह सोच कर हमने उसे नदी में खूब पानी पिलाया और थोड़ा नहला भी दिया। हमारा नहलाना था कि उसकी कराहट और बढ़ गई और हम बड़े सोच में पड़ गए। हमने समझा गाड़ी को ठंड लग गई है, इसलिए इसे तपा देना चाहिए। यह सोच कर हमने दियासलाई से उसमें आग लगा दी। आग लगते ही गाड़ी जल गई और पूले भी जल गए। बैल अधजले होकर जंगल में भाग गए। जब गाड़ी भस्म हो गई तो हमने उसे पानी में बहा दिया और जो कील-पत्ती बची थी, उसे अपने साथ सुरक्षित ले आए हैं। लीजिए यह गठरी।

यह किस्सा सुनकर जाट को बड़ा क्रोध आया और बोला—तुम सब के सब बेवकूफ हो। चले जाओ मेरे यहां से। एक ने मां को मार दिया और तुम तीनों ने गाड़ी-बैल जला दिए। मेरा बहुत नुकसान हो गया। अब मैं तुम्हें न रखूंगा।

जब उन्होंने जाट को बहुत क्रुद्ध देखा तो उसके पैर पकड़ लिए और गिड़गिड़ाते हुए बोले—चौधरी साहब ! हम तो आपके जूते में से निकले हैं। हम कहां जा सकते हैं ? हम तो आप ही के यहां रहेंगे।

जाट को उन पर तरस आ गया और बोला—देखो, आगे से ऐसी बेवकूफी मत करना। काठ की गाड़ी के पेट में भी कहीं दर्द हुआ करता है ? गाड़ी नई थी, इस लिए चर्र-चर्र कर रही होगी। तुमको पता है, उसके जलने से मुझे कितना नुकसान हुआ है ? खैर ! अब तो मैं

तुम्हें माफ किए देता हूं। आगे ध्यान रखना। जाओ, मां की तेरहवीं के लिए पास के गांव से घी खरीद लाओ।

जाट की आज्ञा पाकर रुपये और कुप्पियां लेकर, चारों शेखचिल्ली घी खरीदने चल दिए।

उन्होंने गांव में जाकर चार कुप्पी घी खरीदा। जब घी खरीद चुके तो चारों ने एक-एक कुप्पी उठा ली और अपने-अपने सिर पर रख कर चल दिए। रास्ते में एक बाग पड़ा। दोपहर हो चुकी थी; धूप बहुत तेज पड़ रही थी। इसलिए थोड़ी देर विश्राम के लिए रुक गए। कुप्पियां उतार कर जमीन पर रख दी और उन्हीं के पास बैठ गए। धूप की गर्मी से कुप्पियों का घी पिघल गया था और पानी जैसा पतला हो गया। एक शेखचिल्ली ने यों ही अपनी कुप्पी में झांककर देखा, तो घी में उसका चेहरा दिखाई दिया। शेखचिल्ली डर कर पीछे हट गया और जोर से चिल्लाया—अरे, भूत ! दूसरे शेखचिल्ली ने अपनी कुप्पी में झांका तो उसे भी अपना मुंह दिखाई दिया। वह भी चिल्लाने लगा—'अरे' मेरी कुप्पी में भी है ? तीसरे और चौथे शेखचिल्ली ने भी इसी प्रकार अपनी-अपनी कुप्पी में झांक कर देखा और वे भी घी में अपने चेहरे की परछाईं देखकर उसे भूत समझने लगे। चारों बड़े आश्चर्य में थे कि कुप्पियों में भूत कहां से आ गए। उनको बड़ी चिन्ता हुई और सोचने लगे कि क्या किया जाए; भूत तो खा जाएंगे। इतने में एक शेखचिल्ली बोल उठा—अरे, मेरे कुप्पी का भूत बड़ा भयानक है। कैसा घूर-घूर कर देख रहा है। अरे रे, बचाओ, बचाओ, खाने दौड़ रहा है।

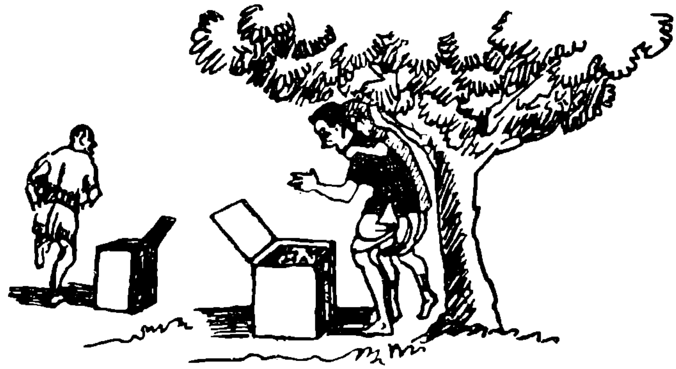
उसकी चिल्लाहट सुन कर दूसरा शेखचिल्ली, जल्दी से उसके पास आया और भूत को देखने के लिए उसकी कुप्पी में झांकने लगा। अब तो कुप्पी में एक के बजाय दो चेहरे दिखने लगे। यह देख कर दोनों चिल्ला उठे—अरे, एक नहीं, दो भूत हैं, दो। जल्दी दौड़ो।

उन दोनों की घबराई हुई आवाज सुन कर शेष दोनों शेखचिल्ली भी आ गए और कुप्पी में झांक कर देखने लगे। अब कुप्पी में दो के बजाय चार चेहरे दिखाई देने लगे। यह देख कर शेखचिल्लियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। पहले कुप्पी में एक भूत था, फिर एक के दो हुए और तुरंत ही दो के चार हो गए। वे आपस में कहने लगे—मालूम होता है भूत ब्या रहे हैं। चल कर देखना चाहिए और कुप्पियों में तो नहीं ब्याए। यह ध्यान में आते ही वे दूसरी कुप्पी के पास गए और उसमें झांक कर देखने लगे। उस कुप्पी में भी चार चेहरे दिखाई दिए। तीसरी कुप्पी में झांका तो उसमें भी चार और चौथी में भी चार चेहरे दिखाई दिए। अब उनको निश्चय हो गया कि भूत जरूर ब्या रहे हैं। वे बहुत डरे और बोले—भाइयो ! कुप्पियों में भूत ब्या रहे हैं। इनकी गिनती बढ़ती ही जा रही है। ये तो हजारों हो जाएंगे और हमको खा जाएंगे। इसलिए इनको अभी मार डालना चाहिए। यह कहते ही उन्होंने डंडे मार-मार कर कुप्पियों को तोड़-फोड़ डाला और सारा घी मिट्टी में मिला दिया।

घी और कुप्पियों को नष्ट-भ्रष्ट करके चारों शेखचिल्ली वहां से भाग छूटे। उनको भय था कि कहीं भूतों के संगी-साथी आकर उन पर हमला न कर दें। वे हांफते हुए घर पहुंचे और जाट

को सारा हाल सुनाया। जाट उनकी बेवकूफी की दास्तान सुन कर बड़ा तिलमिलाया। परंतु कर क्या सकता था ? अपने मन में सोचने लगा—मैं खुद ही बेवकूफ हूं, जो इन बेवकूफों को अपने यहां रखा। इनसे मुझे क्या लाभ है ? हानि ही हानि है। अब मैं एक क्षण भी इनको अपने यहां न रहने दूंगा। जाट क्रोध से लाल हो गया और बोला—तुम लोग निहायत बेवकूफ हो। कहीं कुप्पी में भी भूत ब्याते हैं ? तुम मेरा सत्यानाश करने पर तुले हुए हो। आज ही मेरे घर से चले जाओ। अब मैं तुम्हें न रखूंगा।

इतने में एक शेखचिल्ली बोल उठा—अरे, मेरी कुप्पी का भूत बड़ा भयानक है। कैसे घूर-घूर कर देख रहा है।



शेखचिल्ली जाट के क्रोध का कारण न समझ सके। उसको लाल-पीला होता देखकर वे कांप उठे और आंखों में आंसू भर कर बोले—चौधरी साहब ! हम तो आपके जूते में से निकले हैं। हमारा और कहां ठिकाना है ? हम तो आप ही की शरण में है। आप ही के यहां रहेंगे। आप चाहे मारिए, चाहे छोड़िए।

जाट को फिर उन पर तरस आ गया और बोला—देखो ? अबकी बार मैं तुम्हें और माफ करता हूं। आगे न करूंगा। इसलिए अब ऐसी बेवकूफी न करना। कुप्पियों में तुम्हारे चेहरे दीख रहे थे। भूत-ऊत कुछ न था। तुमने अपनी बेवकूफी के कारण कुप्पियों को तोड़ दिया और घी को बरबाद कर दिया। अब मैं मां की तेरहवीं में बूरा-पूड़ी की दावत नहीं कर सकता। ब्राह्मणों को दाल-भात खिला दूंगा। तुम रुपये ले जाओ और बाजार से दाल और चावल खरीद लाओ। खबरदार, मेरे पास और रुपया नहीं है।

शेखचिल्लियों ने ठंडी सांस ली। जान बची लाखों पाए। रुपये लेकर बाजार गए। दाल और चावल खरीदा। पास ही में जंगली जाति के कुछ लोगों के डेरे पड़े हुए थे। शेखचिल्लियों ने सोचा अगर दाल और चावल इन भूखे लोगों को बांट दिया जाए तो बड़ा अच्छा रहेगा—एक तो बोझा हलका हो जाएगा, दूसरे जाट को पकाने की तकलीफ न करनी पड़ेगी। बस, सब का सब अन्न उनको बांट दिया गया। शेखचिल्ली खुश होते हुए खाली हाथ घर लौट आए।

घर पहुंचने पर जाट ने उनसे पूछा तो उन्होंने चावल बांटने की सारी कथा कह सुनाई।

जाट उनकी बेवकूफी पर बेहद नाराज हुआ और उसने धक्का देकर उन्हें घर से बाहर निकाल कर ही दम लिया।

बादशाह की विचित्र पोशाक

बहुत दिनों की बात है कि किसी देश में एक बादशाह राज्य करता था। उसे नई-नई पोशाक पहनने का बड़ा चाव था। दिन में प्रत्येक कार्य के लिए वह नई पोशाक बदलता था। उसकी पोशाकें धोने, इस्त्री करने, तहाने, झाड़ने, पहनाने, उतारने आदि के लिए ही असंख्य दास-दासियां रखी गई थीं। पोशाकों में नए-नए डिज़ाइन बनाने, उन्हें सीने, संवारने के लिए कारीगरों और दर्ज़ियों के कई विभाग थे, इसी प्रकार नए तरह के कपड़े तैयार करने के लिए कई मिलें थीं।

संक्षेप में यों कहिए कि वह राजकोष का अधिकांश पैसा अपनी पोशाकों पर ही खर्च करता था। बादशाह की देखा-देखी अन्य राज्य कर्मचारियों तथा पुरजनों को भी अपनी वेशभूषा की शान-शौकत बनाए रखनी पड़ती थी। फलस्वरूप उस देश में जुलाहे और दर्ज़ियों ने बड़ा पैसा कमाया। जितना रोजगार उनका चलता था उतना और किसी का नहीं चलता था। इस विषय में प्रतियोगिता का आयोजन होता था और जिसकी तैयार की हुई पोशाक सर्वोत्तम प्रमाणित होती थी उसे बादशाह बहुत इनाम देता था।

अति हर बात की बुरी होती है। बादशाह की पोशाक सम्बंधी यह सनक इतनी बढ़ गई कि राजदरबार में सिवाय पोशाक के और कोई चर्चा ही नहीं होती थी। फैलते-फैलते यह बात दूर-दूर तक फैल गई। एक दिन बादशाह को बेवकूफ बनाकर धन प्राप्त करने की इच्छा से दो भाई उसके दरबार में बड़े ठाठ-बाट से आए और बोले—जहांपनाह ! हम आपका नाम सुनकर आए हैं, आज्ञा हो तो हम भी अपना कुछ हुनर दिखाएं !

बादशाह—तुम किस प्रकार की पोशाक तैयार करने में चतुर हो, तथा तुम्हें उसके लिए क्या-क्या सामग्री चाहिए ? उस पोशाक की क्या विशेषता होगी ?

यह सुनकर ठग बोले—सरकार ! हम पोशाक तो ऐसी तैयार करके देंगे जैसी आज तक आपने कभी पहनी ही न होगी, पर उसके लिए हमें बारीक से बारीक रेशम तथा सोने की तारें सोने-चांदी के करघे, सुईयां आदि चाहिए। उस पोशाक की विशेषता यह होगी, जो व्यक्ति बुद्धिमान और ईमानदार होंगे उन्हें ही वह दिखाई देगी, मूर्ख और कपटी मनुष्यों को वह पोशाक दिखाई ही नहीं दे सकती।

यह सुन कर बादशाह सोचने लगे कि ऐसी पोशाक तो मैं अवश्य बनवाऊंगा, क्योंकि इसके द्वारा मुझे अपने राज्य के बुद्धिमान और ईमानदार व्यक्तियों का पता चल जाएगा। इस प्रकार मैं मूर्ख और कपटी व्यक्तियों को अपने राज्य से निकाल बाहर कर सकूंगा।

बस बादशाह के मंजूर करने की देर थी कि उन दोनों ठगों को मुंहमांगी सुविधाएं जुटा दी गईं। बड़ी शान से उन दोनों ठगों ने कुछ महीने गुजार दिए। जब वे दरबार में हाजिर होते

तो पोशाक के बारे में बादशाह की कल्पना को और भी उभारते। फलस्वरूप बादशाह अपनी पोशाक को देखने के लिए और भी उत्सुक हो गया।

एक दिन उन्होंने अपने खास वज़ीर से कहा—वज़ीर जी, मैं चाहता हूं कि इस पूनम को जब कि मेरा जन्मदिन है, मैं इस विशेष पोशाक को जुलूस के समय पहनूं। अभी बीस दिन बाकी हैं, आप कृपया वहां जाकर देख आएं कि पोशाक कितनी तैयार हो गई है। ज़रा जल्दी तैयार करने का तकाजा भी करना न भूलें।

जो हुक्म—कह कर वज़ीर उस मकान में आया, जहां वे कारीगर ठहरे हुए थे, और ठगों से बोला—कारीगर जी ! बादशाह ने मुझे यह मालूम करने के लिए भेजा है कि पोशाक कितनी तैयार हुई है। कृपया ज़रा दिखाइए तो सही कि किस प्रकार की पोशाक बन रही है ?

वे दोनों ठग उसे उस बड़े हाल में ले आए जहां सोने-चांदी के करघे रखे थे और बोले—वज़ीर जी ! यह देखिए कपड़े की बारीकी, हाथ पर रखा हुआ कुछ पता ही नहीं चलता कि कपड़ा है कि हवा और यह देखिए इस पर बने डिज़ाइन। इस कपड़े की बनी पोशाक को बादशाह सलामत जब पहनकर निकलेंगे तो लोग देखकर हैरान हो जाएंगे।



दोनों ठग बोले—वजीर जी ! यह देखिए कपड़े की बारीकी, हाथ पर रखा हुआ कुछ पता ही नहीं चलता कि कपड़ा है कि हवा और यह देखिए इस पर बने डिज़ाइन।

बेचारा बूढ़ा वज़ीर अपनी आंखें फाड़-फाड़ कर चारों ओर देख रहा था, पर उसे तो वहां कपड़ा क्या सूत का तार भी नज़र नहीं आ रहा था। वह मन-ही-मन सोचने लगा—तो क्या मैं मूर्ख हूं ? बेईमान हूं ? राम-राम ? कहीं बादशाह को यह पता लग गया, तब तो वह मुझे नौकरी से अलग कर देगा। इसलिए किसी को यह प्रगट ही नहीं होना चाहिए कि पोशाक का कपड़ा मुझे दिखाई ही नहीं पड़ा।

अतएव वह उन ठगों की हां-में-हां मिला कर बादशाह के पास आया और बोला—हज़ूर ! पोशाक के लिए कपड़ा तो ऐसा बारीक और हल्का बुना जा रहा है कि बस क्या कहूं ! उस पर बने डिजाइन और बेल-बूटों का तो मैं बयान

ही नहीं कर सकता। मैं कारीगरों को जल्द खत्म करने का तकाजा कर आया हूं, और हां अच्छी याद आई, उन्होंने दो गांठ रेशम और दो सौ तोले सुनहरे तार और मांगे हैं।

अपने बड़े वज़ीर से कपड़े की ऐसी तारीफ सुनकर बादशाह बहुत ही खुश हुए। उन्होंने अपने अधिकारियों को कारीगरों के लिए मुंह मांगा सामान देने का हुक्म दिया।

कुछ दिन बाद बादशाह ने अपने दूसरे वज़ीर से कहा—वज़ीर जी ! अब जरा आप जाकर पोशाक के बारे में पता लगा आएं।

उन दोनों ठगों ने इस वज़ीर के साथ भी वही चाल चली। बेचारा वज़ीर खाली पड़े करघों की ओर आंखें फाड़-फाड़कर देखता रहा, पर उसकी भी यह कहने की हिम्मत न हुई कि यहां पर कोई कपड़ा तैयार नहीं हो रहा है। ठगों की बातों से असहमत होने का मतलब था कि खुद को बेवकूफ और बेईमान प्रमाणित करना। उसने भी दरबार में आकर और भी बढ़ा-चढ़ाकर कपड़े की प्रशंसा की।

अब कुछ दिन जब और बीत गए तो पूनम से एक दिन पहले बादशाह ने अपने शाही दर्ज़ी से कहा कि—जाओ, अब तुम जाकर देख आओ कि पोशाक सिल कर तैयार हो गई है कि नहीं ?

अब वहां शाही दर्ज़ी पहुंचा। वह भी वहां पोशाक का नामोनिशान न पाकर मन-ही-मन सोचने लगा—तो मैं क्या बेवकूफ और बेईमान हूं ? अगर कहीं बादशाह सलामत को यह बात पता लग गई तब तो मेरी नौकरी की खैर नहीं।

वे दोनों ठग, दर्ज़ी के चेहरे पर हवाइयां उड़ते देख मन-ही-मन हंसे। फिर उन्होंने कहना शुरू किया—उस्ताद जी ! आपको तो पोशाक की विशेषता बताने की जरूरत ही नहीं। आखिर आप शाही दर्ज़ी जो ठहरे। खुद ही सब समझते हैं। पर जरा मुलाहिज़ा फरमाइए, देखिए, किस खूबी के साथ इसकी कटाई हुई है, किस प्रकार सम्भालकर इसे सिला गया है, यह झालर, यह घेर, यह घुमाव और फुलाव ! पोशाक में चार चांद लगा रहे हैं। बारीक सुइयां चलाते-चलाते हमारी तो उंगलियों के पोरे तक छिद गए। दिन-रात एक करके तब कहीं यह पोशाक तैयार कर पाए हैं। बस अब पोशाक तैयार ही समझिए, कल सुबह हम खुद ही इसे लेकर बादशाह सलामत के खास कमरे में हाज़िर होंगे।

दरबार में लौट कर दर्ज़ी ने भी पोशाक की बड़ाई के पुल बांध दिए। यह सब सुन-सुनकर बादशाह पोशाक पहनने के लिए और भी अधीर हो उठे।

राम-राम करके वह रात कटी। सुबह होते ही बादशाह को उबटन मल-मल कर नहलाया गया। जूते, मोजे और जांघिया पहनकर जब वह तैयार हो गए तो कारीगरों को हुक्म हुआ कि पोशाक लेकर हाज़िर हों।

बादशाह के सामने भी उन ठगों ने वही चाल चली। टांके तोड़ने, कैंची चलाने आदि का अभिनय करने के पश्चात वे बादशाह की ओर अदब से इस प्रकार बढ़े मानो कोई हल्की-फुल्की पोशाक थामे हुए हों और फिर बाहें पहनाने, कालर ठीक करने, नीचे की झालर को बिखेरने तथा कमर पट्टा कसने का अभिनय करने के पश्चात वे बोले—हज़ूर, जन्मदिन मुबारक हो।

इस पोशाक को पहनकर आज आप फ़रिश्तों को भी मात कर रहे हैं। आज तक इस धरती पर किसी मनुष्य को ऐसी पोशाक पहनने का सौभाग्य नहीं मिला। ज़रा आइने की ओर घूम जाइए और मुलाहिज़ा फ़रमाइए। देखिए, कैसी सजती है यह पोशाक आप पर ! ज़रा अपने इन काबिल वज़ीरों तथा दर्ज़ी से भी पूछ लीजिए कि हमारा कहना दुरुस्त है कि नहीं ?

भला वज़ीर और दर्ज़ी अपनी बात से पीछे कैसे हट सकते थे। वे बोले—जहांपनाह ! इस पोशाक की तो जितनी तारीफ की जाए थोड़ी है। वाह भाई ! वाह ! बहुत ही अद्‌भुत और सुंदर पोशाक बनी है। इसको पहनकर हजूर बिलकुल स्वर्ग के बादशाह से दीखते हैं।

बेचारे बादशाह आंखें फाड़-फाड़कर आइने में देख रहे थे, पर उन्हें अपने बदन पर सिवाय जांघिया के और कोई कपड़ा ही नहीं दिखाई पड़ता था। अब वह मन-ही-मन सोचने लगे कि जो पोशाक मेरे सब वज़ीरों और दरबारियों को दीख रही है, वह मुझे क्यों नहीं दीख रही ? इसका मतलब तो यह हुआ कि ये सब अक्लमंद और ईमानदार हैं, एक अकेला मैं ही भोंदू और बेईमान हूं। अगर मेरी प्रजा को यह सब पता चल गया तो मैं उनकी नज़रों में गिर जाऊंगा। इसलिए सबसे ठीक बात यह होगी कि मैं भी इन लोगों की हां में हां मिलाऊं। बस बादशाह भी मुस्कराकर बोले—हां भाई ! सचमुच में पोशाक बहुत ही हल्की-फुल्की और बेजोड़ बनी है। मेरी सब पोशाकों में यह सर्वोत्तम है।

उनके इस प्रकार संतोष प्रगट करने पर दोनों ठगों ने आगे बढ़कर सलाम किया और कहा—हज़ूर का हुक्म हो जाए तो आज इस शुभ दिन पर हमें भी कुछ मिल जाएगा।

बादशाह ने हुक्म दिया—अब तक सबसे बढ़िया पोशाक पर जो इनाम दिया गया है उससे अठगुणा इन कारीगरों को दिया जाए।

बस इनाम लेकर तथा करघे आदि लेकर ठग तो वहां से चम्पत हुए।

इधर राजा की सवारी निकालने के लिए पूरे दलबल-सहित दरबारी महल के बाहर खड़े



बच्चा चिल्ला उठा—ओ मां ! देखो, आज बादशाह भी मेरी तरह ही नंगे हैं।

थे। बड़े वज़ीर ने बादशाह के सिर पर ताज रखा और आगे-आगे बैंड-बाजा, फिर खास-खास दरबारी, बीच में बादशाह, पीछे प्रजा इस प्रकार नगर में से सवारी निकलनी शुरू हुई। बादशाह की विचित्र पोशाक को देखने के लिए सब पुरवासी सड़क के दोनों ओर मकान की छतों पर लदे पड़ रहे थे। मन-ही-मन सब आश्चर्य कर रहे थे कि आज बादशाह सलामत को हुआ क्या है कि केवल एक जांघिया पहनकर इस प्रकार आम सड़क पर निकल आए हैं ? पर अपने मन की बात कोई दूसरे से कहने का साहस ही नहीं करता था। कारण, जो यह भेद खोलता वह दूसरों की नज़रों में भोंदू और बेईमान प्रमाणित होता। नौकरी से बर्खास्त होने तथा देशनिकाले के डर से कोई भी व्यक्ति सच्ची बात मुंह पर नहीं ला रहा था। सभी बादशाह की पोशाक की बड़ाई के पुल बांध रहे थे।

जब यह जुलूस एक सरोवर के पास पहुंचा, तो वहां एक बच्चा बाजे की आवाज़ सुनकर नहाता-नहाता नंगा ही सरोवर से बाहर भाग आया। उसकी मां उसे बहुतेरा रोकती रही कि अरे! अरे! तू बादशाह के सामने नंगा भागा जा रहा है। पर वह जुलूस देखने के लिए इस तेज़ी से सड़क की ओर को भागा कि भीड़ को चीरकर आगे आ खड़ा हुआ। जब बादशाह की सवारी वहां तक पहुंची तो वह बच्चा चिल्ला उठा—ओ मां! देखो, आज बादशाह भी मेरी तरह ही नंगे हैं, उन्होंने भी कपड़े नहीं पहने हुए।

भोले-भाले बालक की यह बात सुनकर पुरवासी एक-दूसरे से कहने लगे—सुनो! सुनो यह सरल बालक कैसी सच्ची बात कह रहा है।

बादशाह ने भी यह बात सुनी। अब उन्हें अपने नंगे रहने में कोई संदेह नहीं रहा। परंतु अपने वज़ीर और दरबारियों की शान रखने के लिए उन्होंने निश्चित मंडप तक जाना ही उचित समझा। पर उस दिन से बादशाह ने फिर कभी नई-नई पोशाकों को पहनने की लालसा प्रकट नहीं की। इस विचित्र पोशाक ने उसकी सनक का हमेशा के लिए इलाज कर दिया और राजकोष बरबाद होने से बच गया।

बैंगन की चोरी

एक था ब्राह्मण और एक थी ब्राह्मणी। ब्राह्मण का नाम था दलसुख शंकर तिवारी और ब्राह्मणी का नाम था चंचला। ब्राह्मणी को बैंगन की तरकारी बहुत ही भाती थी।

एक बार ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से कहा—सुनो तो महाराज ! तुम रोज दाना पटेल की बाड़ी में स्नान करने जाते हो। फिर एक बार बैंगन क्यों नहीं लाते। मैं प्रतिदिन सूखी रोटी खाते-खाते ऊब गई हूं। सुना है, इस साल उसके खेत में बहुत ही बैंगन हुआ है। आज जब स्नान करने जाओ, तो ज़रूर ही बैंगन ले आना। वरना दरवाज़ा बन्द कर लूंगी। लाख बिनती करने पर भी नहीं खोलूंगी।

ब्राह्मण ने कहा—अजी, बैंगन कहीं बाड़ी में वैसे ही पड़े हैं, कि मन में आया और ले लें। लेने से पहले उनके मालिक को पूछना पड़ता है।

—तो पूछ लीजिए न ! पूछने का दाम तो नहीं लगेगा ?

ब्राह्मण ने कहा—अच्छा-अच्छा जी। और हाथ में तौलिया ले, दाना, पटेल की बाड़ी की ओर स्नान करने चल पड़ा।

वहां पर उन्होंने कुएं पर जा स्नान किया। गमछे से शरीर पोंछ लिया और भीगी धोती पहने घर की ओर चलने लगा।

ज्यों ही बाड़ी के दरवाजे पर आया, उनको ब्राह्मणी की बात याद आ गई। 'अरे ! उसने तो बैंगन लाने को कहा है। अगर न ले जाऊंगा तो जान न छोड़ेगी। अच्छा चलो, पटेल से पूछ के कुछ बैंगन मांग लूं, अगर वह दे देगा तो अच्छा ही है।

ऐसा सोचकर वापस आया, और पटेल को देखने लगा। लेकिन पटेल वहां न था। उसने खेत की ओर देखा, झोंपड़ी में देखा, पर कहीं भी वह नहीं दिखाई दिया। खेत में बड़े-बड़े और काले-काले सुंदर बैंगन लटके हुए थे। कहीं गोल-गोल और छोटे-छोटे भी नज़र आ रहे थे। अरे ! कितने सुंदर बैंगन हैं ये ! उसने दिल में सोचा। अगर पटेल होता तो उससे पूछकर मैं कुछ ले लेता। पर अब क्या किया जाए। पटेल न सही बाड़ी तो है। उसी से पूछ लूंगा। लेकिन बैंगन लूंगा ज़रूर।

ऐसा सोच कर बाड़ी को उद्देश्य कर वह पूछने लगा।

—बाड़ी रे, ओ बाड़ी !

पर भला बाड़ी कहीं बोल सकती है क्या ? इसलिए बाड़ी के ऐवज़ में खुद ने ही जवाब दिया।

—क्या कहते हो दला तरवाड़ी ? (तिवारी)

—ये बैंगन ले लूं दो-चार ? ब्राह्मण ने पूछा।

—ले ले न दस-बारह ? उसने खुद ही जवाब दिया।

ऐसा करके उन्होंने दस-बारह अच्छे-अच्छे बैंगन तोड़े। तोड़ के अपने तौलिये में उनको बांध घर को चल पड़े।

घर आ उन्होंने ब्राह्मणी को बैंगन दिखलाए। ढेर सारे काले-काले बैंगन देखकर वह खुशी से फूली न समाई।

ब्राह्मणी ने प्रेम से उन्हें तेल में छौंककर और नमक-मिर्च डालकर ऐसा स्वादिष्ट साग बनाया कि कहते ही बने। ब्राह्मण और ब्राह्मणी ने उस दिन रोटी और साग पेट भर के खाया और उनके आनंद की सीमा न रही।

दूसरा दिन हुआ। प्रातःकाल जब ब्राह्मण स्नान करने गया, तो ब्राह्मणी ने याद दिलाया कि बैंगन लाना मत भूलना।

ब्राह्मण ने भी हंसते-हंसते 'हां' कह दिया, और स्नान करने के बाद बाड़ी से पूछा—

—बाड़ी रे बाड़ी !

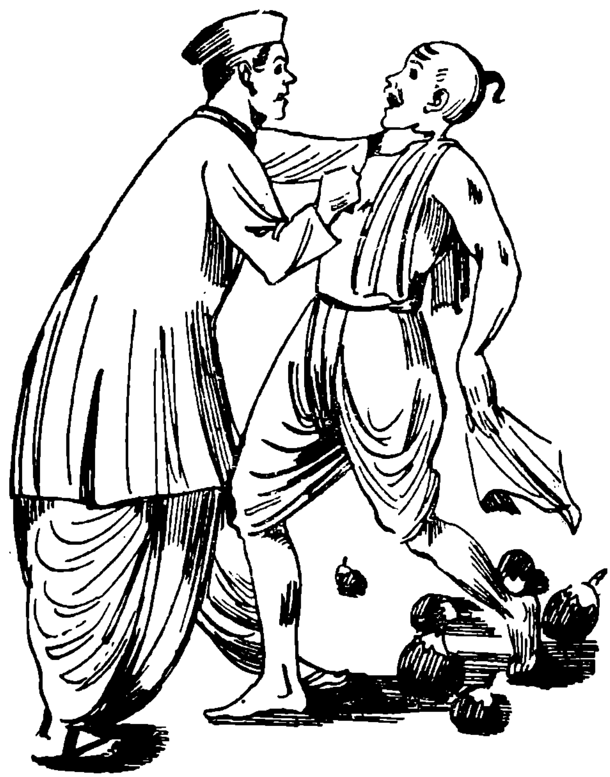
—क्या कहते हो दला तरवाड़ी ?

—बैंगन ले लूं दो-चार ?

ले ले न दस-बारह ?

फिर बैंगन-तोड़े, और घर आया। इसी प्रकार दोनों को बैंगन की तरकारी का स्वाद लगा। प्रतिदिन ब्राह्मण इसी तरह बाड़ी से चुरा के बैंगन लाते और दोनों खाते।

उधर दाना पटेल हैरान हो गया। यह क्या-क्या रोज़-रोज़ बाड़ी में बैंगन कम होते जा रहे हैं ? अच्छा आज तो मैं खुद निगरानी करूंगा। ऐसा सोच दाना पटेल एक दिन खेत में छिपकर बैठ गया। प्रातःकाल हुआ ब्राह्मण आया, स्नान करने के बाद हमेशा की भांति वह



उसने ब्राह्मण की गर्दन लपककर पकड़ ली और बोला—अरे ओ, भिखमंगे ब्राह्मण ! बाड़ी तेरे बाप की है कि रोज़ बिना पूछे बैंगन चुरा ले जाते हो ?

बैंगन की तरकारी लेने आया। कहने लगा—

—बाड़ी रे बाड़ी !

– क्या कहते हो दला तरवाड़ी ?

—बैंगन ले लूं दो-चार ?

—ले ले न दस-बारह।

इस प्रकार बातचीत करने के बाद उन्होंने बैंगन लिए, और घर की ओर चलने लगे।

दाना पटेल ने खुद आंखों से देखा। अच्छा तो यही चोर रोज यहां पहुंच जाता है, और सफाई से बैंगन ले जाता है। मैं आज इसको बैंगन खाने का मज़ा चखाता हूं। और उसने चुपके से जाकर ब्राह्मण की गर्दन लपक कर पकड़ ली।

—अरे ओ ! भिखमंगे ब्राह्मण ! बाड़ी तेरे बाप की है कि रोज़ बिना पूछे बैंगन चुरा ले जाते हो ?

ब्राह्मण ने कहा—कभी नहीं, भाई साहब कभी नहीं। बिना पूछे हमने कभी बैंगन नहीं लिये।

पटेल ने कहा—किससे पूछा था, मुझसे तो कभी नहीं पूछा।

ब्राह्मण ने कहा—आप यहां नहीं होते थे, तो मैं बाड़ी से ही पूछ लेता था।

—अच्छा यही बात है। तो ले मैं भी वैसा ही करूंगा।

ऐसा कह उन्होंने ब्राह्मण की दोनों टांगें रस्सी से बांध दीं और उसको सिर के बल कुएं में लटका दिया। उसका सिर जल की सतह तक आ गया तो उन्होंने पूछा :

—कुआं रे, ओ कुआं !

लेकिन कुआं कभी बोलता है ! इसलिए पटेल ने ही प्रत्युत्तर दिया।

—क्या कहते हो दाना बबुआ ?

—इस चोर महाराज को गोते खिला दूं दो-चार !

—खिला दे न दस-बारह।

बस उन्होंने ब्राह्मण को कुए के जल में दस-बारह गोते खिलाए। ब्राह्मण बेचारा तड़प उठा। हाथ जोड़ने लगा और कहने लगा, अब मुझे बाहर निकालिए। मैं आपकी शरण में हूं।

लेकिन दाना पटेल ने उसको बार-बार डुबकियां खिलाईं। इसके बाद जब वह बिल्कुल रो पड़ा, तो उसको बाहर निकाला और टांग खोलकर पूछा—

—क्यों महाराज, अब बाड़ी में बैंगन चुराने जाओगे क्या ?

ब्राह्मण ने हाथ जोड़ पांव पकड़कर कहा—अभी मुझे जाने दीजिए। अब मैं कभी न आऊंगा, न इस बाड़ी की ओर दृष्टि ही करूंगा।

पटेल को फिर तरस आया और उसको जाने दिया।

उस दिन से ब्राह्मण और ब्राह्मणी बैंगन की तरकारी खाना भूल गए।



हवालात में

एक गांव में तीन अफीमची थे, उनके नाम थे—दम्मू-कम्मू और छम्मू। एक बार वे शहर आए और एक सराय में ठहरे।

जब सवेरा हुआ, तो दम्मू, कम्मू और छम्मू अफीम पीने बैठे। धीरे-धीरे नशे का रंग जम चला, तो बातचीत ने जोर पकड़ना शुरू किया। दम्मू मियां बोले—यार, क्या कहें, अब तो ज़माने की हवा बदल गई है। गल्ला परमिट पर मिलेगा, कपड़ा परमिट पर मिलेगा, तेल परमिट पर मिलेगा, नमक परमिट पर मिलेगा और भी कभी सुनी थी ऐसी दिल्लगी ?

कम्मू मियां ने चुंगी में जला हुआ छर्रा फूंकते-फूंकते कहा—परमिट-परमिट तो हम भी सुन रहे हैं, मगर यह पता न चला कि आखिर यह परमिट है किस बला का नाम ?

छम्मू मियां चुंगी पर छर्रा जमाते-जमाते बोले—'गधे ही रहे! इतना भी नहीं जानते कि परमिट किस आफ़त का नाम है ! सुनो परमिट किवाड़ जैसा लम्बा-चौड़ा लकड़ी का एक तख्ता होता है। हमने खुद अपनी आंखों से देखा है, उस दिन एक आदमी कचहरी से बहुत से परमिट गाड़ी में लदवा कर ला रहा था।

कम्मू मियां ने आंखें फाड़-फाड़ कर छम्मू मियां को देखा और कहा—ऐ ! परमिट किवाड़ों के बराबर लम्बा-चौड़ा लकड़ी का तख्ता होता है। आखिर वह आता किस काम है ?

दम्मू मियां ताव में आकर बोले—तभी तो लोग कहते हैं कि अफीमची बेवकूफ होते हैं ! अब इनको यह बताओ कि परमिट लेकर कंट्रोल की दुकान पर जाओ और तरकारी-भाजी नमक-मिर्च तेल-खटाई, पूरी-मिठाई, जो तबियत में आए, तुलवा लाओ।

छम्मू मियां ने हंस कर कहा—सरकार को भी क्या दिल्लगी सूझी है ! लोग सर पर किवाड़ लादे बाजार में दुकानों-दुकानों फिरेंगे। खुदा की कसम, एक तमाशा नज़र आएगा; और मजा यह कि मुफ्त देखने को मिलेगा।

दम्मू मियां ठंडी सांस लेकर बोले—हंसते क्या हो ? अब शक्कर भी तो परमिट पर मिलेगी।

छम्मू मियां लाल-लाल आंख निकाल कर चीख उठे—क्या कहा, शक्कर भी परमिट पर मिलेगी ? गलत ! बिल्कुल गलत ? सरकार जानती है कि अगर अफीमचियों को शक्कर आजादी से न मिलेगी, तो बेचारे बिना मौत मर जाएंगे। इसलिए शक्कर पर तो कंट्रोल लगने से रहा। यकीन न हो, तो हमसे लिखवा लो।

कम्मू मियां ने छर्रा बनाते-बनाते कहा - पढ़ न लिखे, लगे बैल की तरह दलाकने—हमसे लिखवा लो, हमसे लिखवा लो ! और चीज़ों का कंट्रोल हो, चाहे न हो, शक्कर का कंट्रोल ज़रूर होगा ! सरकार अफीमचियों से जलती है और वह उनको तंग करने की ठान चुकी है। हमसे तो बम पोलिस के जमादार ने यही कहा था।

छम्मू मियां मुंह बना कर बोले- तुम भी यार, क्या चंडूखाने की गप्प मारते हो ! भला सरकार अफीमचियों से क्यों जलने लगी ?

छम्मू मियां ने जला हुआ छर्रा ज़मीन पर ठोकते-ठोकते कहा--यही दुनिया का कायदा है ! लोग-बाग जिसको खाते-पीते देखते हैं, उसी से जलने लगते हैं। जब सरकार ने देखा कि हम तो शक्कर खाते नहीं, और ये अफीमची शक्कर खाए बगैर मानते नहीं, तो वह जल उठी। उसने हुक्म निकाल दिया कि लगाओ शक्कर पर कंट्रोल और करो अफीमचियों को तंग।

छम्मू मियां आपे से बाहर हो गए, चुंगी पटक कर और होंठ काट कर बोले—अगर यह बात है, तो तुम भी समझ लो कि सरकार की मौत आ गई है। कभी हम मंत्र पढ़ कर फूंकें कि लेने के देने पड़ जाएं। अभी वह हमें समझे क्या है।

दम्मू मियां ने छम्मू मियां पर एक ताज्जुब भरी निगाह डाली और सवाल किया—अरे, तो तुम मंत्र भी पढ़ना जानते हो ?

छम्मू मियां ने अकड़ कर जवाब दिया—बड़े भोले हो, जैसे कुछ जानते ही न हो। अहा ! अब्बाजान को तो वह मंत्र मालूम थे कि बस, कुछ पूछो मत ! बात ही बात में ज़िन्दों को मुर्दा और मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे। हम भी कुछ कम नहीं हैं, चाहें तो यह सरकार ससुरी किस खेत की मूली है—एक फूंक में फुर्र हो जाए।

कम्मू मियां डर कर बोले—अमां, ज़रा ज़बान में लगाम भी लगाओ। लगे हो ऊरान-तूरान बकने। कोई सुन लेगा, तो मंत्र बंधे-बंधे फिरोगे। शक्कर न मिलेगी, तो कौन मर जाएंगे। गुड़ खा लेंगे। जब शक्कर खाने को बहुत जी चाहेगा, तो सर पर किवाड़ रख कर किसी दूकान पर जा खड़े होंगे। बस, अल्लाह-अल्लाह, खैर सल्लाह।

दम्मू मियां ने चिलम में तमाखू भरते-भरते कहा—गलत ! घरेलू किवाड़ों पर कोई शक्कर न देगा। शक्कर तो सरकारी किवाड़ों पर ही मिलेगी। हम लोग कचहरी में ही क्यों न एक किवाड़ ले आएं। मुफ्त तो मिलते हैं। न किसी बात का डर, न किसी बात का झगड़ा।

छम्मू मियां उछल पड़े, बोले—सुबहान अल्लाह ! यार मियां दम्मू, इस वक्त तुमने वह बात कही है, जो लाख रुपये में भी सस्ती है। खुदा की कसम, हमारी तबीयत खुश हो गई। बस, झटपट नशे पानी में टंच हो जाओ और कचहरी चलो, एक-एक किवाड़ उठा लाएं। शक्कर न मिलेगी, तो मकान में लगाने के काम ही आ जाएंगे।

कम्मू मियां ने खुश होकर कहा—अहा हां ! ऐसा हो जाए, तो क्या कहना ? हमारे मकान में पीछे वाले दरवाज़े का एक किवाड़ सड़ भी गया है। हमेशा चोरों, डाकुओं और जानवरों का खटका लगा रहता है।

इस तरह तीनों दोस्त एक राय होकर बारह बजते-बजते कचहरी पहुंचे। कंट्रोल वाले साहब के बाबू ने उनसे कहा—अभी तो साहब आए नहीं हैं। उनके आने पर तुम्हारी पुकार होगी। बाहर जाओ, बरगद के नीचे बैठो।

तीनों दोस्त बरगद के नीचे आए, तो छम्मू मियां ने कहा—बुरा हुआ ! हम लोग नाहक इतनी जल्दी आ गए। क्या मालूम साहब कब तक आएगा, और हमें कब तक इस बरगद के नीचे ऊंघना पड़ेगा। अगर अफीम लेते आते, तो मज़े में रहते, खैर चिलम निकालो तमाखू ही उड़े।

कम्मू मियां ने धीरे-धीरे चिलम निकाली, दाएं पैर के अंगूठे और उंगली बीच में दबाई। इसके बाद बाएं हाथ की हथेली पर तमाखू रखी और दाएं हाथ के अंगूठे से मलनी शुरू की। इतने में जो पीनक आई, तो वह उसी तरह बैठे रह गए। यह देखते ही छम्मू मियां बोले—बैठते देर नहीं हुई, और लगे जन्नत के ख्वाब देखने। अरे मियां, चिलम गरम करो। ऊंघने के लिए तो दिन भर पड़ा है।

कम्मू मियां ने चौंक कर कहा—ए ! क्या कहा—साहब आ गया ! तो बस, भाई हमारा दरवाज़ा भी लेते आना। अगर साहब हमारे बारे में पूछे तो कह देना कि वह आया तो था, मगर तबीयत अलील होने से घर चला गया।

दम्मू मियां उनको ज़रा धक्का देकर बोले—यह क्या बक रहा है भले आदमी ? होश में आ। चिलम गरम कर।

कम्मू मियां ने एकदम आंखें खाल दीं और मुंह पर हाथ फेरते-फेरते कहा--अरे ! चिलम कहां गई ? क्या सब तमाखू तुम्हीं ने पी डाली ? बस यही दिल्लगी हमें पसंद नहीं आती। लाओ, ज़रा इधर बढ़ाओ, हम भी पिएं।

छम्मू मियां बिगड़ कर बोले—क्यों तमाशा दिखाते हो यार ! अफीमची वैसे ही बदनाम होते हैं, कहीं लोग तुम्हारी यह पीनक देख लेंगे तो मारे हंसी के गिर-गिर पड़ेंगे और शहर भर में शोर मचाते फिरेंगे कि अफीमची यह करते हैं—वह करते हैं। चिलम दबाए बैठे हो अपने पैर के अंगूठे में और रेंक रहे हो गधे की तरह कि चिलम कहां गई ?

अब कम्मू मियां के गुस्से का क्या कहना था ? उन्होंने चिलम में तमाखू जमाते-जमाते गुर्रा कर कहा—देखो जी, मुह संभाल कर बोला करो। यहां किसी के दबे-चपे नहीं हैं। जब जी में जो आता है, बकने लगते हो। लिख रखो, इन बातों में किसी दिन धोखा खा जाओगे।

छम्मू मियां बिगड़ कर बोले—तुम करोगे क्या ? एक धक्के में पचास कुलांचें भरते फिरोगे।

कम्मू मियां ने चिलम मुंह की तरफ बढ़ाई और कड़क कर जवाब दिया—हम कच्चा चबा जाएंगे, इस भरोसे न रहना।

दम्मू मियां ने दोनों को समझाने-बुझाने के ख्याल से कहा—शर्म की बात है ? तुम लोग यहां काठ-कबाड़ लेने आए हो या लड़ने-झगड़ने ? शक्कर मिलने का इन्तज़ाम हो जाए, फिर घर चल कर खूब लड़-झगड़ लेना।

कम्मू मियां दियासलाई सुलगाते-सुलगाते बोले, हम लड़ते-झगड़ते हैं या तमाखू पीते हैं ? ऐसी बातें करते हो कि लड़ाई-झगड़ा न होता हो, तो हो जाए ! वाह ! तुम भी खूब रहे।

दम्मू मियां ने कम्मू मियां के हाथ से चिलम लेते-लेते कहा—हमें तो आसार अच्छे नज़र नहीं आते। तुमने उस बाबू को देखा था ?

कम्मू मियां ने खांसते-खांसते जवाब दिया—देखा क्यों नहीं था। कम्बख्त किस तरह बड़ी-बड़ी आंखें निकाल रहा था। खुदा की कसम, हमारे तो रोंगटे खड़े हो गए थे। वह तो यह कहो, हम ज़रा हिम्मतवर हैं, इसीलिए बच गए, वरना मरने में कोई कसर थोड़े ही थी।

दम्मू मियां ने चिलम छम्मू मियां को देते-देते कहा—या अल्लाह, तौबा है ! या अल्लाह तौबा है ! जब बाबू का यह हाल है, तो साहब का क्या हाल होगा ! क्यों छम्मू मियां, तुम्हें उम्मीद है कि वह हम लोगों को काठ-कबाड़ दे देगा ?

छम्मू मियां ज़रा अकड़ कर—ज़रा मुंह बना कर बोले—तुम भी बच्चों जैसी बातें करते हो ! देगा क्यों नहीं ! आखिर हम किस लिए हैं ? उसने इन्कार किया नहीं, कि हमने मंत्र पढ़ कर फूंका नहीं ! अगर कम्बख्त कुर्सी पर ही टें न बोल जाए, तो हमारे मुंह पर थूक देना।

कंट्रोल वाले साहब न जाने कहां से वहां आ पहुंचे थे, और एक तरफ खड़े-खड़े उन तीनों की बातें सुन रहे थे। उन्होंने दफ्तर में जाते ही उनकी पुकार कराई। अब क्या था, तीनों हांफते-कांपते हाथ जोड़कर साहब के सामने जा खड़े हुए। साहब ने मुस्करा कर उनसे पूछा—क्या चाहते हो तुम लोग ?

छम्मू मियां बोले—अल्लाह खुश रखे हुज़ूर को। हम लोग गरीब अफीमची हैं। आप जानिए, बगैर शक्कर हमारा काम नहीं चल सकता। अगर हम लोगों को एक-एक नया नाम है उसका ! बोलो न दम्मू मियां ? चुप क्यों खड़े हो ? क्या तमाम बातें हमीं कहें ?

दम्मू मियां बोले—हां-हां, वही तो—वही तो ! क्या नाम है उसका—हमें तो याद ही नहीं आता !...बताओ न कम्मू मियां हुज़ूर को। क्या बोलने का ठेका अकेले हमीं ने ले रखा है ? शक्कर लेने को तो जल्दी दौड़ पड़ोगे।

कम्मू मियां बोले—नाम तो ठीक-ठीक हमें भी याद नहीं रहा। ईंट-पत्थर या लकड़ी-पत्थर...ऐसा ही तो कहा था तुमने।

साहब खुशमिजाज थे—दिल्लगीबाज भी थे। उन्होंने कुछ लिखकर एक कागज छम्मू मियां की तरफ बढ़ाया और हंसते-हंसते कहा—जाओ, यह कागज कोतवाली ले जाओ। तुम ईंट-पत्थर या लकड़ी-पत्थर जो भी चाहोगे, वहां तुम्हें मिल जाएगा।

तीनों दफ्तर से बाहर निकले, तो मारे खुशी के उनके पैर ज़मीन पर सीधे नहीं पड़ रहे थे। छम्मू मियां बोले—देखा तुमने ? हमने जो मंत्र पढ़कर फूंका, तो साहब किस तरह उल्लू बन गया ? उसे हुक्म लिखना ही पड़ा।



छम्मू मियां सर हिलाकर बोले—कौन हम लोग ? अजी, तौबा कीजिए। यहां मंत्र-तंत्र कोई नहीं जानता। आप तो इस कागज में ईंट-पत्थर जो कुछ लिखा हो, दिलवा दीजिए।

दम्मू मियां बोले—रहने भी दो यह तारीफ ! देख लिया हमने तुम्हारा मंत्र ! नाम तो तुम्हें याद नहीं रहा था। अगर वक्त पर हमने बात न सम्भाली होती, तो धरा रहता तुम्ह यह कागज-फागज।

कम्मू मियां बोले—क्यों बातें मारते हो यार ! तारीफ करो हमारी, जो वक्त पर ह नाम बता दिया। अगर हमने नाम न बताया होता, तुम्हारे फरिश्तों को भी तो यह का नहीं मिलता !

इस तरह बातें करते हुए तीनों कोतवाली पहुंचे। दम्मू मियां ने वह कागज मुंशी जी क दिया। उसमें लिखा था—ये तीनों आदमी हमारे सामने मंत्र पढ़ने आए थे। इनको थोड़ी के लिए हवालात में बंद कर दो, ताकि इनके होश की दवा हो जाए।

मुंशी जी ने सर से पैर तक देखा। फिर सवाल किया—तुम लोग साहब के सामने पढ़ने गए थे ?

छम्मू मियां सर हिला कर बोले-कौन हम लोग ? अजी, तौबा कीजिए। यहां मंत्र-तंत्र कोई नहीं जानता। आप तो इस कागज़ में ईंट-पत्थर जो कुछ लिखा हो, दिलवा दीजिए। हमें शक्कर की ज़रूरत है।

मुंशी जी ने एक सिपाही को हुक्म दिया—इन लोगों को हवालात में बंद कर दो।

अब तो तीनों ताज्जुब से आंखें फाड़-फाड़ कर, लगे एक-दूसरे का मुंह ताकने। उन्होंने बहुत चिल्ल-पों मचाई। मगर वहां उनकी कौन सुनने वाला था। सिपाही ने उनको धक्के मारते हुए हवालात में बंद कर दिया और कहा—और जाना साहब के सामने मंत्र पढ़ने।

चूहे की कहानी

एक विशाल घने जंगल में एक महात्मा की कुटिया थी और उसमें एक चूहा रहा करता था। महात्मा उसे बहुत प्यार करते थे। जब पूजा से निवृत्त हो वह अपनी मृगछाला पर आ बैठते, तो चूहा दौड़ता हुआ उनके पास आ पहुंचता। कभी उनकी टांगों पर दौड़ता, कभी कूद कर उनके कंधों पर चढ़ बैठता। महात्मा सारे वक्त हंसते रहते। धीरे-धीरे उन्होंने चूहे को मनुष्यों की तरह बोलना भी सिखा दिया।

एक बार उस चूहे के छोटे-से दिल में बलवान बनने की लालसा पैदा हुई। वह बोला—

—महाराज बिल्ली के दांत कितने तेज होते हैं। उसके पंजों में इतनी ताकत है कि एक झपट्टे में चूहे को दबोच लेती है, और मार कर खा जाती है। बिल्ली से सब चूहे डरते हैं। चूहे से कोई नहीं डरता।

महाराज, हंसने लगे, बोले—फिर तू क्या चाहता है?

—महाराज, कोई ऐसा उपाय करें, जिसमें मैं भी बिल्ली बन जाऊं।

—बिल्ली बन कर क्या करेगा?

—फिर मुझ से सभी डरेंगे। फिर मैं बिल्ली बन कर बिल्ली से लड़ूंगा। उससे चूहों का बदला लूंगा। उसने हम पर बड़े अत्याचार किए हैं। वह सैकड़ों चूहे खा चुकी है।

उन महात्मा में ऐसी शक्ति थी कि वह अपने योगबल से एक जीव को दूसरे जीव में बदल सकते थे। उन्होंने चूहे को बहुतेरा समझाया कि केवल पशु-शक्ति से ही कोई बलवान नहीं बन जाता, मगर चूहा नहीं माना। तब उन्होंने अपने कमंडल में से थोड़ा गंगाजल निकाला, उसकी कुछ बूंदें चूहे पर छिड़कीं, फिर बायां हाथ ऊपर उठा कर बोले—तथास्तु!

और देखते ही देखते वहां पर एक सफेद रंग की बिल्ली आ खड़ी हुई। नीली-नीली आंखें, छोटा-सा मुंह, मुलायम और सफेद बर्फ जैसी खाल। उसे देख कर साधु महाराज भी हैरान रह गए। क्षण भर तो वह महाराज के सामने खड़ी रही, फिर झपटा मार कर चूहे के बिल की ओर लपकी। मगर बिल को खाली देख कर चूहों की खोज में कुटिया से बाहर चली आई।

बिल्ली बनते ही वह बिल्लियों से बदला लेना भूल गई, उल्टे चूहों पर ही टूट पड़ी। जहां कोई चूहा नजर आता। उसे काट खाती। हर वक्त उसका मुंह और पंजे खून से सने रहते।

पर धीरे-धीरे वह फिर असंतुष्ट रहने लगी।

एक दिन जब साधु महाराज गंगातट से लौट कर आए, तो बिल्ली छत पर बैठी रो रही थी। कहने लगी—

—महाराज, असल ताकत तो कुत्ते में होती है, उसके सामने बिल्ली की क्या गति ? जब आप चले जाते हैं, तो एक कुत्ता मुझे खाने को दौड़ता है। उससे सब डरते हैं। बिल्ली की खाल को वह देखते ही देखते उधेड़ डालता है, उसके दांत मोटी-मोटी हड्डियां भी तोड़ डालते हैं। महाराज, मैं बलवान बनना चाहती हूं। आप मुझे कुत्ता बना दें।

महाराज कुछ कहना चाहते थे, मगर चुप रहे और चुपचाप कमंडल में से गंगाजल की बूंदें बिल्ली पर छिड़क कर 'तथास्तु' कह दिया।

और देखते ही देखते बिल्ली के स्थान पर एक डबियाले रंग का कुत्ता अपने कान और पूंछ हिलाता हुआ आन खड़ा हुआ। पतली टांगें, तेज नुकीले दांत, आगे को बढ़ा हुआ नथुना।

बस फिर क्या था। कुटिया के बाहर रोज हड्डियों के ढेर लगने लगे। कभी गिलहरी, कभी खरगोश, कभी बिल्ली, जो कोई मिलता कुत्ता उसे झपट कर मार डालता, और अपने तेज नुकीले दांतों से उसकी बोटी-बोटी चबा जाता। कुटिया के बाहर जमीन पर खून के धब्बे ही धब्बे नजर आने लगे।

मगर एक दिन जब महाराज कुटिया में मृगछाला पर बैठे विश्राम कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि कुत्ता दूर जगल से रोता-कराहता चला आ रहा है। उसका एक कान कटा हुआ था और शरीर पर जगह-जगह से खून बह रहा था।

महाराज, आसन छोड़कर उठ खड़े हुए और उसे अंदर लिवा लाए।

—क्या हुआ ? तेरी यह दशा किसने की ?

महाराज, रीछ बड़ा बलवान जानवर है। उसमें असल ताकत है। अगर मैं भाग नहीं आया होता तो वह मुझे आज मार डालता।

महाराज ने कुत्ते के जख्म धोए, मगर कुत्ता बार-बार जमीन पर पांव पटक-पटक कर कहता गया—

महाराज, रीछ से सब डरते हैं। मेरे भी उस जैसे तेज़ नख और पंजे होते, तो मुझ से भी सब डरते। रीछ किसी को अपनी बांहों में ले ले तो उसकी हड्डियां तोड़ डालता है। कुत्ते, बिल्ली को तो वह झपट्टे में मार डालता है।

महाराज कुत्ते का अभिप्राय समझ गए और हंसते हुए उस पर गंगाजल छिड़क दिया और उसे रीछ बना दिया।

रीछ बनते ही पहले तो वह साधु महाराज पर गुर्राया। यदि साधु महाराज में योगबल न होता तो वह पहले उन्हीं पर अपने पंजे चलाता। अपनी शक्ति से वह मतवाला हो उठा। लाल आंखें, भयानक काला शरीर, लम्बे-लम्बे नख, मोटा नथुना, भागा हुआ वह वन में चला गया, और सब छोटे-मोटे जानवरों पर अपना हाथ साफ करने लगा।

मगर उस जीव की शक्ति की भूख कब मिटने वाली थी। थोड़े ही दिनों में उसे अपने से बलिष्ठ भालू नजर आया, फिर चीता, फिर बाघ। एक-एक करके वह सभी में बदलता गया। उस जंगल में शेर न था, नहीं तो वह शेर बन कर सबसे शक्तिशाली बनना चाहता।

आखिर वह एक रोज महाराज के सामने हाथ बांध कर बोला—महाराज, मैंने देख लिया है। वन में सबसे शक्तिशाली जीव हाथी है। उस की शक्ति की कोई सीमा नहीं। वह अपनी सूंड से बड़े-बड़े पशुओं को पटक देता है। एक पदाघात से ऊंचे-ऊंचे पेड़ तोड़ फेंकता है। उसके दांत कितने लम्बे हैं। आप मुझे हाथी बना दें। यह मेरी अंतिम प्रार्थना होगी।

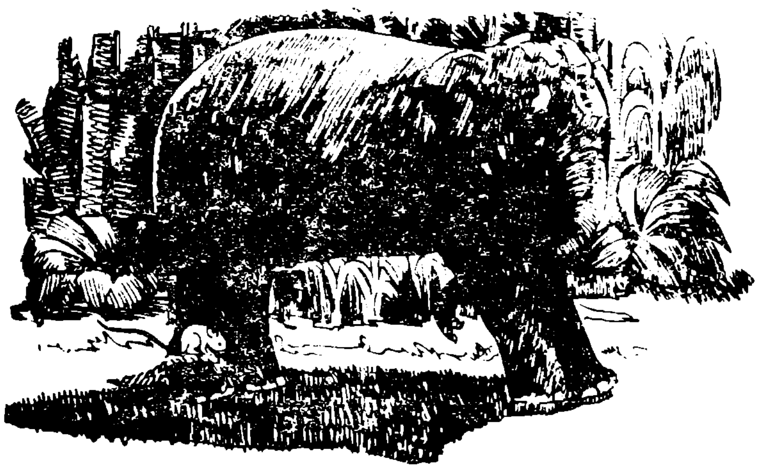
—सोच ले, मूर्ख। फिर तो भागा-भागा मेरे पास नहीं आएगा ?

—नहीं महाराज, अब कभी नहीं आऊंगा। आप मुझे हाथी बना दें।

महाराज ने हंसते हुए अपना मंत्र पढ़ दिया और गंगाजल छिड़क दिया।

कुटिया के बाहर एक ऊंचा, अधियारे रंग का भीमकाय हाथी झूमने लगा। कद में कुटिया से भी ऊंचा, लम्बे-लम्बे दो दांत, विकराल देह, स्थूल बोझिल टांगें।

हाथी चिंघाड़ता हुआ वन की ओर दौड़ा। उसकी शक्ति का पार न था। जंगल के जिस भाग में जाता, पशु वहां से भाग खड़े होते। उसकी चिंघाड़ सुन कर पेड़ों पर बैठे हुए पक्षी थर-थर कांपते हुए उड़ने लगे। पेड़, पौधे उखाड़ता वह बड़े-बड़े पशुओं को अपने पांव के नीचे कुचलने लगा। उसके अत्याचार से सारे वन में कोहराम मच गया।



नन्हा-सा चूहा उसके पांव पर बैठा अपने नन्हें-नन्हें दांतों से उसकी रस्सियां काट रहा था।

और एक दिन, वह इस तरह गर्व से चिंघाड़ता हुआ एक वृक्ष-कुंज को तहस-नहस करके बाहर निकल रहा था कि सहसा उसका पांव उखड़ गया और वह धड़ाम से एक गढ़े में जा गिरा। उसके गढ़े में गिरने की देर थी कि जंगल में बहुत-से मनुष्यों की आवाजें आने लगीं और देखते ही देखते बीसियों आदमी हाथों में रस्से, बर्छे और तरह-तरह के हथियार उठाए मुंह पर मुश्कें बांधे, गढ़े के इर्द-गिर्द आ खड़े हुए। गढ़े में गिरते ही हाथी के दोनों दांत गढ़े की दीवार के साथ टकरा कर टूट गए थे। उसके माथे और टांगों पर गहरी चोट आई थी, और वह दर्द से कराहने लगा था। उसने गढ़े में से निकलने की बहुतेरी कोशिश की, मगर ज्योंही गढ़े की दीवार के साथ अपने पांव लगा कर उठने का प्रयत्न करता, उसी समय उस पर बर्छे और भालों के प्रहार होने लगते। हाथी दर्द और क्रोध से पागल हो उठा।

जब शिकारियों ने देखा कि हाथी काबू में आ गया है तो उस पर रस्से फेंकने लगे। गढ़े की एक दीवार लकड़ी की थी, उसे तोड़ कर शिकारी हाथी को बांधे उसे मारते-घसीटते बाहर निकालने लगे। एक आदमी उसकी गर्दन पर तेज कटार लेकर आ बैठा। रस्सों से उसके पिछले दोनों पांव एक साथ बांध दिए गए। इस प्रकार हांकते हुए वह हाथी को जंगल से बाहर ले जाने लगे।

इतने में शाम पड़ गई और चारों ओर अंधेरा छा गया। एक स्थान पर शिकारी रुक गए और हाथी के पांव को मोटे-मोटे रस्सों से एक वटवृक्ष के तने के साथ बांध कर यह सोच कर कि उसे कल खींच कर शहर को ले जाएंगे, वह जंगल में से बाहर चले गए।

रात गहरी होने लगी। भूख और शरीर की पीड़ा से व्याकुल हो हाथी बार-बार चिंघाड़ने लगता, मगर जंगल में उसकी आवाज चारों दिशाओं में घूम कर लौट आती। उसका क्रंदन शून्यता को भंग करता हुआ फिर शून्यता ही में खो जाता। वह बार-बार अपने जी में कहता—जो मुझे मालूम होता कि हाथी से भी कोई बली जीव है तो मैं शिकारी बनता। काश कि साधु महाराज को मेरी दशा का ज्ञान हो जाए।

इतने में हाथी को ऐसे भान हुआ जैसे उसके पिछले पांव पर खुजली हुई है। हाथी ने कोई ध्यान न दिया। फिर खुजली हुई, फिर भी उसने कोई ध्यान न दिया। फिर ऐसा जान पड़ा जैसे उसके पिछले पांव पर कोई हल्की-हल्की आवाज़ कर रहा है। आकाश में चांद खिल उठा था। सिर झुका कर हाथी ने अपने पांव की ओर देखा। क्या देखता है कि एक नन्हा-सा चूहा उसके पांव पर चढ़ा हुआ है। हाथी को पहले तो क्रोध आया और जी चाहा कि उसे वहीं पर मसल दे। मगर आकाश में छिटकी चांदनी में जब उसने चूहे की ओर दोबारा देखा तो देख कर हैरान रह गया। नन्हा-सा चूहा उसके पांव पर बैठा, अपने नन्हे-नन्हे दांतों से उसकी रस्सियां काट रहा था। हाथी आंखें फाड़-फाड़ कर उसकी तरफ देखने लगा। यह चूहा कौन है ? क्यों मेरे बंधन काट रहा है ? हाथी बार-बार सोचता और हैरान हो उठता।

रात बीत चली। धीरे-धीरे पौ फटने लगी। पूर्व की ओर आकाश का रंग सुनहरा होने लगा। जब सूर्यदेव ने क्षितिज पर दर्शन दिए और उनकी पहली किरण ने जंगल पर अपना स्वर्ण बिखेरना शुरू किया तो जंगल में शिकारियों की हू-हू-हा-हा फिर सुनाई पड़ने लगी। हाथी कांप उठा। मगर ठीक उसी वक्त उसकी रस्सी का आखिरी फंदा भी टूट कर अलग हो गया, और उसका शरीर आजाद हो गया।

हाथी ने कृतज्ञता से झुक-कर चूहे की ओर देखा, मगर चूहे का वहां नाम-निशान न था। रस्सियां काटकर वह चुपचाप चल दिया था।

हाथी उछलता-कूदता साधु महाराज की कुटिया की ओर भाग खड़ा हुआ।

संध्योपासना से निवृत हो साधु महाराज कमंडल उठाए, गंगा तट को जाने के लिए तैयार थे, जब उनकी कुटिया के सामने हाथी आ खड़ा हुआ।

—कहो गजराज, अब क्या है ?—साधु महाराज ने पूछा।

हाथी ने दोनों पैर पृथ्वी पर टेक अपनी सूंड को बार-बार ऊपर उठा महाराज को प्रणाम किया।

—महाराज, मैं आप से अन्तिम वरदान की भिक्षा मांगने आया हूं।

महाराज ने उसे सिर से पांव तक देखा।

—अब भी कोई लालसा बाकी है? क्या शिकारी बनना चाहते हो?

—नहीं महाराज, आप मुझे फिर से चूहा बना दें।

—चूहा? शक्ति के राजा से तुम चूहा बनना चाहते हो?

—हां महाराज, मुझे मारने वाली शक्ति नहीं चाहिए, मुझे ऐसी शक्ति दीजिए, जिससे मैं औरों के बंधन काट सकूं।

महाराज ने हंसते-हंसते उसी क्षण गंगाजल की बूंदें छिड़क दीं, और अपना आशीर्वाद दे दिया।

थापड़ थैया

एक गांव में एक पंडित जी रहते थे। उनके सिर पर एक लम्बी चोटी, माथे पर चंदन पुता और गले में रुद्राक्ष की माला पड़ी रहती थी। यदि सच कहा जाए तो पंडित जी के लिए काला अक्षर भैंस बराबर था। परंतु अपनी चालाक बुद्धि से अनपढ़ गांव वालों को पंडित जी ने खूब मूर्ख बना रखा था, और उन्हें खूब ठगते थे।

एक दिन गांव वालों ने मिलकर सत्यनारायण की कथा की। उस रोज पंडित जी ने अपने पिता जी की रखी हुई मलमल की पगड़ी निकाल कर और अपनी मिरजई पंडिताइन से धुलवाकर पहनी। बस पंडित जी जंच गए। गोरे चेहरे पर बड़ा-सा चंदन का टीका ऐसे सज गया जैसे सफेद कागज पर छापे के शब्द। सत्यनारायण की कथा के श्लोक पंडित जी यों जल्दी-जल्दी गुनगुनाने लगे—

यस्य ज्ञानम् दयासिन्धो, लगा धक्का तो गिर पड़ा।

भैंस तो मेरी मर गई दूध का तोड़ा पड़ा।



पंडित जी ईश्वर की स्तुति में यह श्लोक बार-बार दुहरा रहे थे— दो पैसा तो मिल गया एक चवन्नी की है चाह, पगड़ी, धोती नई मिले, हे ईश्वर, हे राम।

इसी प्रकार के दो चार श्लोक पंडित जी को खूब याद थे। सत्यनारायण की कथा हो, चाहे शिवजी की, चाहे भूत-मंत्र पढ़ना हो, पंडित जी इसी प्रकार के दो-चार श्लोकों को घुमा

फिराकर इतनी जल्दी पढ़ जाते थे कि सुनने वाले उन्हें कालिदास और भर्तृहरि ही समझ लेते थे।

एक समय की बात है कि दो भाई, काशी से आचार्य की पदवी लेकर तथा संस्कृत के पूरे पंडित बनकर घर लौटने लगे। रात होने पर उनको उसी गांव में विश्राम करना पड़ा। उन्हें पंडित समझ, गांव वाले अपने पंडित जी से मिलाने के लिए उत्कंठित हो गए। गांव वालों ने दोनों भाइयों से अपने पंडित जी की विद्वत्ता के बहुत गान गाए और कहा कि शास्त्रार्थ में हमारे पंडित जी से कोई भी नहीं जीत सकता।

पंडित जी से मिलने के लिए दोनों आचार्य पहुंचे। देखा, पंडित जी भगवान की मूर्ति के सामने पूजा कर रहे हैं। पंडित जी ईश्वर की स्तुति में यह श्लोक बार-बार दुहरा रहे थे—

दो पैसा तो मिल गया, एक चवन्नी की चाह,
पगड़ी, धोती नई मिले, हे ईश्वर, हे राम।

इस प्रकार की स्तुति को सुनकर दोनों आचार्य जोर से हंसने लगे। तब नाराज होकर पंडित जी ने उन्हें शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। शर्त यह हुई कि जो हार जाए वह अपना सब सामान और असबाब जीतने वाले को दे दे।

शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। गांव के पंडित जी ने एक अर्ध-वाक्य कहकर उसे पूरा करने को कहा। वह अर्ध-वाक्य था, थापड़-थैया।



शास्त्रार्थ में गांव के पंडित जी हार गए।

दोनों आचार्य घबड़ाए, और उसे पूरा करने के लिए कोई भी श्लोक न बना सके। उन्हें पता न चला कि थापड़-थैया क्या बला है। अंत में हार कर तमाम अपना सामान गांव के पंडित जी को देकर दुखी मन से वे घर लौट आए। घर जाकर उन्होंने यह सारा घटना अपने छोटे भाई को बताई, जो घर पर रह कर खेती करता था, और अनपढ़ था परंतु था बड़ा ही होशियार ।

बहुत सोच लेने पर उसे बदला लेने की तरकीब सूझ गई। उसने भी पंडित जी का रूप धारण किया, चंदन का लेप किया और माला आदि गले में डाल कर चल पड़ा।

उसी गांव में आकर उसने शास्त्रार्थ के लिए पंडित जी को ललकारा। पहले जैसी शर्त फिर बदी गई। गांव के पंडित जी ने उसी प्रकार पूरा करने के लिए थापड़-थैया कहा, जिसे नए पंडित ने झट पूरा कर दिया।

पहिले पीसी चक्की, गूंधा आटा, चक चक चैय्या,
तवा चढ़ा दिया चूल्हे पर, फिर रोटी थापड़-थैया।

शास्त्रार्थ में गांव के पंडित जी हार गए। नए पंडित जी बहुत-सा धन तथा अपना भाइयों का सामान लेकर जीत का डंका बजाते हुए घर लौट आए।

लाल बुझक्कड़

एक बार लाल बुझक्कड़ के गांव वाले तीर्थयात्रा पर निकले। उन्होंने साथ में अपने गुरु लाल बुझक्कड़ जी को भी ले लिया। मध्याह्न का समय था। सूर्य की किरणों से कुछ दूरी पर पड़ा, एक कांच का टुकड़ा चमक रहा था। गांव के लोग उसे चमकता देख बड़े ही आश्चर्य में पड़े। उन्होंने अपने गुरु जी को वह चमक दिखाई हुए पूछा—महाराज यह क्या है ? लाल बुझक्कड़ ने महान पंडित की तरह उत्तर दिया—

"लाल बुझक्कड़ बूझते, और न बूझे कोय,
या तो चंदा चिटक गए, या सूरज को सुत होय।"



लाल बुझक्कड़ बूझते, और न बूझे कोय,
पैरों चक्की बांध के—हिरना कूदा होय।

सब कह उठे, ठीक है। या तो चंदा मामा चटक गए हैं। नहीं तो यह सूरज का बेटा जन्मा है। गांव वालों को सन्तोष हो गया। इसी तरह एक गांव के पास एक पुराना कोल्हू पड़ा देखकर उनके आश्चर्य की सीमा न रही। लोगों ने उसके बारे में विविध अनुमान लगाए, अंत में लाल बुझक्कड़ जी के निर्णय पर मामला छोड़ दिया गया। जब लाल बुझक्कड़ से पूछा तो उन्होंने चट से उत्तर दिया—

लाल बुझक्कड़ बूझते, और न बूझे कोय,
हो न होय अल्लाह की, सुरमादानी होय।

गांववालों को निश्चय हो गया कि सचमुच यह अल्लाह मियां की सुरमादानी ही हो सकती है।

एक दिन की बात है, जब लाल बुझक्कड़ और गांववाले सो चुके थे, तब साधुओं की एक जमात, गांव के पास के मार्ग से पिछली रात में निकल गई। जमात में हाथी भी थे। सुबह जब लोग उसे रास्ते पर पहुंचे तो हाथी के पांवों के निशान देख, बड़े ही आश्चर्य में पड़े। एक आदमी दौड़ कर लाल बुझक्कड़ जी को बुला लाया और हाथी के पांव के निशान दिखा कर जानना चाहा। लाल बुझक्कड़ ने अपनी बुद्धि दौड़ा कर कहा—

"लाल बुझक्कड़ बूझते, और न बूझे कोय,
पैरों चक्की बांध के हिरना कूदा होय।"

गांव वालों ने धन्य! धन्य! कह कर लाल बुझक्कड़ की बात मान ली। उन्हें यकीन हो गया कि पांवों में चक्की बांध कर हिरण ही उछालें मारता हुआ यहां से निकला है।

एक घटना और सुनिए। एक दिन एक छः-सात वर्ष की कन्या अपने घर के बरामदे में खंभे को पकड़े खड़ी थी। इतने में एक स्त्री गांव में भीगे चने बांटती आई और उस कन्या को दे गई। कन्या ने खंभे को दोनों भुजाओं में लिए अंजली में चने ले लिए। जब कन्या ने घर में जाना चाहा तो वह निकल न सकी। क्योंकि हाथ अलग-अलग किए बिना निकलना असम्भव था और ऐसा करने से चने बिखर जाते। लड़की जोर-जोर से रोने लगी। घर के और गांव के लोग इकट्ठे हो गए। सब परेशान थे कि लड़की को कैसे निकाला जाए। जब कोई उपाय न सूझा तो वहां लाल बुझक्कड़ जी को बुलाया गया। उन्होंने फौरन कहा :

"लाल बुझक्कड़ बूझते, और न बूझे कोय,
छान उठा कर काढ़लो, होनी हो सो होय।

ऐसा ही किया गया। गांव के लोगों ने छप्पर उठाया तब कहीं उस लड़की को उठा कर खम्भे में से निकाला गया। ऐसी अनेक कविताएं लाल बुझक्कड़ जी की प्रसिद्ध हैं।

दूध का तालाब

बीरबल, बादशाह अकबर के नवरत्नों में से एक थे। अपने हंसमुख स्वभाव और हाजिर-जवाबी के कारण वह बादशाह अकबर के बड़े प्रिय पात्र बन गए थे। दोनों में प्रायः नोक-झोंक हुआ करती थी। एक बार अकबर का दरबार लगा हुआ था। चारों ओर नवरत्न बैठे हुए थे। बादशाह अकबर अपनी गद्दी पर बैठे हुए अपना पेचदार हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। बात ही बात में वणिकों की चर्चा छिड़ पड़ी।

बीरबल ने कहा—बादशाह सलामत, वणिकों के स्वभाव की एक खासियत है।

बादशाह ने पूछा—वह क्या खासियत है? हमें भी बताओ बीरबल।

बीरबल—जहांपनाह जहां पैसा खर्च करने का सवाल आता है, वहां सब वणिकों का एक-मत होता है। हर एक यही सोचता है कि पैसा खर्च करे बिना काम हो जाए तो अच्छा है।

बादशाह अकबर बोले—मैं तुम्हारी बात मानने को तैयार नहीं हूं, क्योंकि दुनिया में अधिकतर यह देखने में आता है कि एक घर के चार भाइयों का एक मत नहीं होता, फिर भला सब जात भाई एक मत के कैसे हो सकते हैं?

अबुल फ़ज़ल, टोडरमल तथा अन्य दरबारी बादशाह की हां में हां मिलाने लगे। बीरबल ने कहा—जहांपनाह, सांच को आंच क्या? मेरी बात परख ली जाए।

अकबर बोले—ठीक है। अगले बुधवार तक हम इस बात का सबूत चाहते हैं।



अकबर बोले—ठीक है। अगले बुधवार तक हम इस बात का सबूत चाहते हैं।

बीरबल ने हाथ जोड़ कर कहा—अन्न-दाता! महल के बगीचे में जो तालाब हैं, उसे खाली करवा दिया जाए और इस बात का नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया जाए कि नगर के सब वणिक मंगल की रात को तालाब में एक-एक लोटा दूध डाल जाएं। साथ ही इस बात का भी प्रबंध हो कि तालाब के पास दो दरवाज़े हों। एक से सब वणिक एक-एक करके आएं और दूसरे से निकल जाएं।

बादशाह ने बीरबल के कहे अनुसार प्रबंध करवा दिया। मंगल की रात को नगर के सब वणिक एक-एक लोटा लेकर महल की ओर चल पड़े। पर हर एक ने यह सोचा हुआ था कि 'सब तो दूध डालेंगे ही यदि मैं एक लोटा पानी डाल दूं तो क्या पता चलता है ? काहे को पैसा बिगाड़ा जाए।'



यह सब देखकर हैरान हो गए कि तालाब दूध की जगह पानी से भरा हुआ है।

दूसरे दिन बीरबल अकबर के साथ बाग में पहुंचे। सब दरबारी भी साथ थे। सब यह देखकर हैरान हो गए कि तालाब दूध की जगह पानी से भरा हुआ है। अब बीरबल ने सिर झुका कर सलाम किया और बोला—कहिए जहांपनाह ! मेरी बात सच निकली न ?

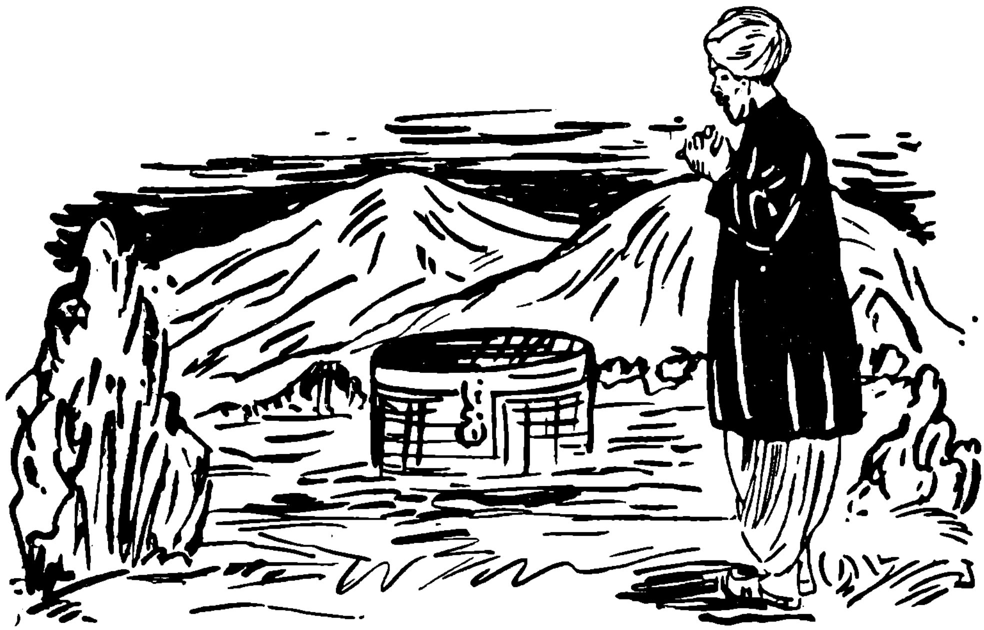
धूर्त पुजारी

एक समय गंगा नदी के किनारे एक मन्दिर में एक पुजारी रहता था। इस पुजारी ने मौन की प्रतिज्ञा की थी और शहर के सब लोग इस बात को जानते थे। पुजारी रोज़ एक धार्मिक व्यापारी के यहां भिक्षा (सीधा) लेने जाता था। सदा की भांति जब वह एक दिन भिक्षा लेने व्यापारी के यहां गया तो उस दिन व्यापारी की लड़की, जो बड़ी सुंदर थी, उसे सीधा देने बाहर आई। लड़की को देख कर पुजारी उस पर मोहित हो गया और उसके मुंह से एकाएक निकल पड़ा—ओह !

पुजारी के ये शब्द व्यापारी के कान में पड़े और यह सुन कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह दौड़ा-दौड़ा पुजारी के पास आया और पूछा—महाराज, आपने मेरी बेटी को देख कर 'ओह' क्यों किया ? आपने अपना मौन व्रत तोड़ा, ज़रूर कोई बात है।

धूर्त पुजारी ने पहले तो उत्तर देने में आनाकानी की, लेकिन बार-बार अनुरोध किए जाने पर उसने कहा—मैंने इसलिए 'ओह' किया क्योंकि आपकी लड़की अत्यंत सुंदरी होने पर भी अभागी है।

व्यापारी—यह कैसे हो सकता है ? यह तो मेरी एकमात्र संतान है।



पुजारी ने जब पिटारी किनारे की ओर आती देखी तो वह बहुत ही खुश हुआ।

पुजारी—जब इस लड़की की शादी होगी तो आप और आपके परिवार के सभी लोगों की मृत्यु हो जाएगी।

इस पर व्यापारी ने चिन्ता और दुःख प्रगट करते हुए पूछा—तब मुझे क्या उपाय करना चाहिए, जिससे इस दैवी प्रकोप से बचा जा सके? कोई पूजा-पाठ बताइए।

पुजारी ने गम्भीर होकर कहा—पूजा-पाठ से कुछ नहीं होगा। यह तो विधि का विधान है। पत्थर की लकीर है। हां, एक उपाय है। आज रात को ही आप लड़की को एक पिटारी में बंद करके, फिर पिटारी पर एक जलता हुआ दिया रख कर, गंगा में प्रवाहित कर दीजिए।

व्यापारी की आंखों में आंसू आ गए, और वह रुंधे हुए स्वर में बोला—तो महाराज कोई दूसरा रास्ता नहीं है? आपने यह तो बड़ा भयंकर उपाय बताया। जिस पुत्री को मैंने पाल-पोस कर इतना बड़ा किया, अपने जीवन की सभी आशाएं लगाईं, उसे गंगा में निर्मोही होकर छोड़ देना मेरे बस का नहीं है।

इस पर पुजारी ने अति गम्भीर होकर रूखे स्वर में कहा—कोई दूसरा रास्ता नहीं है। इतना कह कर वह चलने लगा।

व्यापारी ने बड़े दुःख के साथ रोते-रोते कहा—तो कल पौ फटने से पहले ही आपकी आज्ञा का पालन किया जाएगा।

उधर धूर्त पुजारी ने मन्दिर में पहुंच कर, अपने नौकर-चाकरों को बुलाकर आदेश दिया—आज रात को गंगा तट पर निगरानी रखना और यदि तुम्हें कोई चमकती हुई चीज दिखाई दे तो उसे बाहर निकाल लाना। उसे खोल कर न देखना, वरना भस्म हो जाओगे!

इधर व्यापारी ने पुजारी की आज्ञा के अनुसार अपनी पुत्री को पिटारी में बंद कराकर, उस पर एक दिया रख कर गंगा में प्रवाहित कर दिया। भाग्य से एक राजकुमार ने, जो उस समय गंगा तट पर आखेट करने आया था, इस अजीब-सी चीज को देखा और ज्योंही वह पास आई, त्योंही राजकुमार ने अपने नौकरों को आज्ञा दी कि इसे निकाल लो। नौकर झटपट पिटारी को किनारे लाए। लेकिन जब राजकुमार ने उसका दिया हटाकर ढक्कन खोला तो उसमें बैठी हुई एक सुंदरी युवती ने अपना सर ऊपर उठा कर कुछ विस्मय और भय के साथ राजकुमार की ओर देखा। राजकुमार भी आश्चर्य से मूर्तिवत रह गया। फिर होश सम्भाल कर उसने युवती को पिटारी से बाहर निकाला और पूछा—हे सुंदरी, आपको इस पिटारी में बंद करके गंगा में इस प्रकार प्रवाहित किए जाने का क्या कारण है?

युवती ने आदि से अन्त तक सारी कहानी सुनाई। राजकुमार सब कुछ समझ गया। वह इसके रहस्य को भी ताड़ गया। उसे पुजारी की धूर्तता पर क्रोध और उस लड़की के पिता की नासमझी पर दया आई।

राजकुमार ने पूछा—वह पुजारी कहां रहता है?

युवती ने उंगली से इशारा करते हुए बताया—नदी के उस किनारे पर जो मन्दिर है, वहां वह पुजारी रहता है।



व्यापारी ने लड़की की शादी राजकुमार से कर दी

राजकुमार कुछ समय तक सोचता रहा और फिर अपने नौकरों को आदेश दिया कि पिटारी में गुस्सैल बंदर को, जिसे आज ही पिंजड़े में कैद किया गया है, बंद करके और उस पर दिया रख कर पुनः प्रवाहित कर दो। नौकरों ने तत्काल ऐसा ही किया। इसके बाद राजकुमार ने अपने नौकरों को आज्ञा दी—पिटारी के साथ-साथ जाकर देखो कि इसका क्या नतीजा होता है और उसकी सूचना मुझे देना।

कुछ समय बाद नौकर लौट कर आए और उन्होंने राजकुमार को आंखों-देखा हाल इस प्रकार सुनाया—जब पिटारी मन्दिर के पास पहुंची तो मन्दिर से चार-पांच आदमी बाहर आए और उसे निकाल कर मन्दिर में ले गए और उसे पुजारी के सामने रख दिया। पुजारी उसी क्षण पिटारी लेकर मन्दिर के सबसे ऊपर वाली मंज़िल पर चढ़ गया। लेकिन ज्योंहि उसने पिटारी का ढक्कन खोला कि बंदर ने उस पर आक्रमण कर दिया। और वह 'हाय-हाय ! मरा-मरा !' कहता हुआ लुढ़कता-पुढ़कता सीढ़ियों से नीचे आ गिरा। बंदर ने पुजारी के नाक और कान काट लिए। हल्ला सुनकर पुजारी के नौकर वहां आ गए और उन्होंने बंदर को भगा दिया।

यह सब सुन कर युवती अपने मुंह पर हाथ रख कर फफक-फफक कर रोने लगी और राजकुमार के प्रति आभार प्रकट करने लगी। राजकुमार युवती को लेकर उसके घर गया और सारा वृत्तांत उसके पिता को कह सुनाया। पिता ने भी राजकुमार के प्रति आभार प्रकट किया। यही नहीं उन्होंने अपनी लड़की की शादी भी राजकुमार के साथ कर दी।

उधर इस घटना से शहर के सब लोग यह जान गए कि पुजारी धूर्त, पाखंडी और नीच है। पुजारी भी अपना मुंह किसी को नहीं दिखा सकता था। उसका एक कान और एक नाक कट गए थे। वह मन्दिर के अंदर भी नहीं रह सकता था—अतएव एक रात को वह चुपचाप नगर से भाग गया।

अंधेर नगरी चौपट राजा

एक महात्मा थे। वह बड़े विद्वान और निर्लोभी थे। इनका एक चेला था रामदास—एक दिन गुरु और चेला तीर्थ करते-करते एक नगरी में पहुंचे। गुरु ने शहर से दूर एक मंदिर के पास डेरा डाला और चेले से कहा—जा बेटा, शहर जाकर कुछ खाने-पीने की सामग्री खरीद ला।

चेला बाजार से लौटा तो झोली भर कर सामान ले आया। गुरुजी ने पूछा—बच्चा, इतने थोड़े पैसों में इतना सामान कैसे आ गया?

चेला बोला—महाराज! कुछ न पूछिए इस नगर का! यहां हर चीज टके सेर बिकती है। नगर की प्रत्येक दुकान पर यात्रियों को सूचित करने के लिए लिखा हुआ है, 'टके सेर भाजी टके सेर खाजा।'।

खैर खा-पीकर शाम को सत्संग हुआ। दूसरे ही दिन गुरुजी ने चेले को चलने की तैयारी करने को कहा तो चेला बोला—महाराज! मुझे तो यह नगर बड़ा अच्छा लगा, यहां सभी चीजें सस्ती हैं, खाने-पीने की मौज है। मैं तो यहीं डेरा जमाऊंगा।

गुरुजी ने कहा—बेटा, यह अंधेर नगरी है, यहां के राजा का नाम है चौपट महाराज! यहां किसी भी बात का न्याय नहीं हो सकता। बुरे-भले, सच्चे-झूठे सब एक समान समझे जाते हैं। अतएव मेरी राय में तो यहां रहना मुसीबत में पड़ना है। पर चेले ने गुरु जी की बात नहीं मानी, हार कर गुरुजी चले गए और यह कह गए कि ठीक है, ठोकर खाए बिना तुम अक्लमंद नहीं बन सकते।

गुरुजी के चले जाने के बाद चेला रोज दोपहर को शहर में चिमटा बजाता हुआ निकलता और डट कर पूड़ी-हलवा और खाजा-मिठाई खाकर आता। एक दिन किसी दुकान की दीवार गिर जाने से एक आदमी नीचे दब कर मर गया। इस मामले की रिपोर्ट कोतवाल ने राज-दरबार में कर दी। दुकान का मालिक पकड़ लिया गया। जब उसकी पेशी हुई तो वह हाथ जोड़कर बोला—महाराज! इसमें मेरा कोई कसूर नहीं। राज ने दीवार कमजोर बनाई थी।

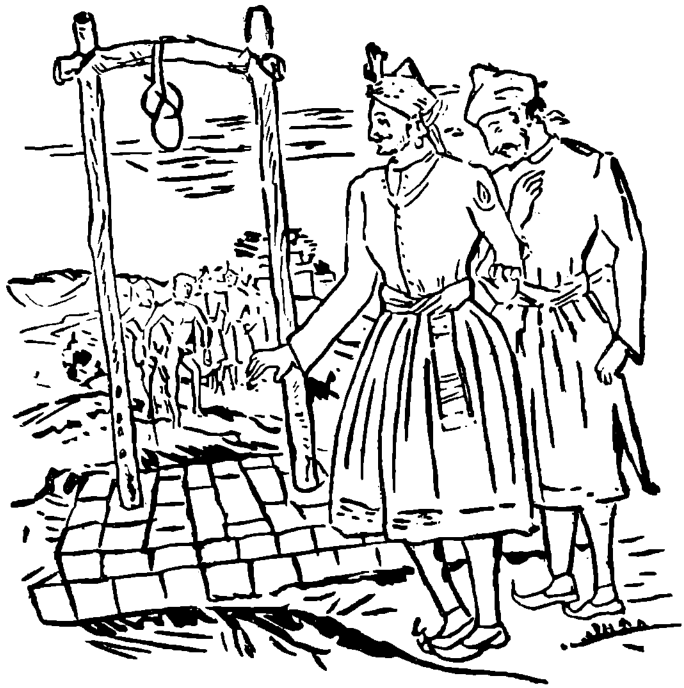
अब राज पकड़ कर लाया गया। हाथ जोड़ कर राज बोला—अन्नदाता! लगता है, मजदूर ने उसमें गारा और मसाला पतला मिलाया होगा।

मजदूर की पेशी हुई, वह गिड़गिड़ा कर बोला—गरीब-नवाज, मेरा कोई कसूर नहीं है। माश्की ने पानी अधिक डाल दिया था, इसलिए गारा पतला हो गया।

इस पर माश्की को पकड़ कर हाज़िर किया गया। माश्की फ़र्शी सलाम करके बोला—सरकार! मैं बेकसूर हूं। जब मैं गारे में पानी डाल रहा था उस समय रामदास जोर-जोर से चिमटा बजाता हुआ उधर से निकला, बस मेरा ध्यान उधर बंट गया। मेरी मुट्ठी ढीली पड़ गई। मैं क्या करता?

इस पर हुक्म हुआ कि रामदास को पकड़ कर फांसी दे दी जाए। उस समय रामदास हलवाई की दुकान पर बैठा डटकर मिठाई खा रहा था। इतने में सिपाहियों ने जाकर उसकी मुश्कें कस लीं और खींच कर फांसी-घर की ओर ले चले। चेले ने बहुतेरे हाथ-पांव जोड़े पर उसकी किसी ने न सुनी। हाय! गुरुजी! किधर गए? बचाओ मुझे! तुम ठीक कहते थे कि इस अंधेर नगरी में किसी के साथ न्याय नहीं होता। इस प्रकार वह दुहाई देकर रोने लगा।

संयोग से उसी समय घूमते-घूमते गुरुजी भी उधर आ निकले। जब उन्हें पता चला कि उनके चेले को फांसी लगने जा रही है, तब वह जल्दी-जल्दी फांसी के मैदान में पहुंचे। वहां पर एक ऊंचे मंच पर राजा अपने मंत्री सहित बैठा हुआ था। गुरुजी ने पहुंच कर राजा औरमंत्री को आशीर्वाद दिया और बोले—महाराज! इस चेले के बदले मुझे फांसी दी जाए। राजा ने आश्चर्य से पूछा—यह क्यों? आप क्यों मरना चाहते हैं?



राजा ने कहा—ठीक है, दो फंदे लटका दिए जाए, हम दोनों साथ ही साथ फांसी पर लटकेंगे।

गुरुजी बोले—धर्मावतार! मैंने गणना की है आज की यह घड़ी मरने के लिए इतनी शुभ हैं कि जो आज मरेगा, वह सीधा स्वर्ग जाएगा।

इस पर राजा बोला—तो मैं ऐसा शुभ अवसर क्यों हाथ से जाने दूं? चेले के बदले मैं ही फांसी पर चढ़ूंगा। फिर भला मंत्री कब पीछे रहने वाला था, वह बोला—महाराज, मैं आप का मंत्री हूं। मुझ पर भी कृपा की जाए।

राजा ने कहा—ठीक है, दो फंदे लटका दिया जाएं, हम दोनों साथ ही साथ फांसी पर लटकेंगे।

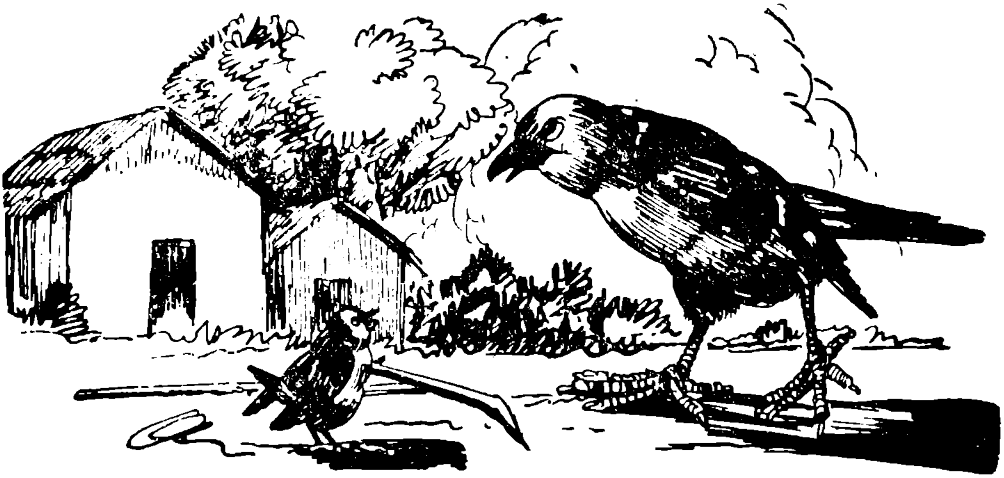
ऐसा ही किया गया। मूर्ख राजा और उसका खुशामदी मंत्री दोनों ही उस दिन फांसी पर लटक गए। गुरुजी अपने चेले को लेकर उसी दिन उस नगरी से चल दिए। मार्ग में गुरुजी ने पूछा—क्यों बच्चा, अंधेर नगरी का जीवन कैसा रहा?

चेले ने अपने कान पकड़ कर कहा—महाराज! भगवान बचाए ऐसे राजा और ऐसे राज्य से, जहां न्याय का नाम तक नहीं। आपने ठीक ही कहा था।

करनी का फल

एक जंगल में एक चिड़िया और एक कौआ रहते थे। दोनों में बड़ी गाढ़ी मित्रता थी। चिड़िया पूर्ण रूप से अपनी मित्रता निभाती, लेकिन कौआ काइयां और धूर्त था। वह सदा ही चिड़िया की शराफ़त का नाजायज़ फायदा उठाता। लेकिन था वह बहुत मिष्ट-भाषी।

वर्षा ऋतु आ पहुंची थी। सब लोग बुआई आदि के कामों में लगे थे। अवसर पाकर चिड़िया ने कौए से कहा—कौए भाई ! बरसात आ पहुंची है, आओ, गेहूं बोने के लिए ज़मीन तैयार कर लें।



चिड़िया ने कौए से कहा—कौए भाई ! बरसात आ पहुंची है, आओ, गेहूं बोने के लिए जमीन तैयार कर लें।

कौए ने उत्तर दिया—ठीक है चिड़िया दीदी, देर नहीं करनी चाहिए, अगर एक-दो बार और भी ज़ोरों की बारिश हो गई तो बड़ी कठिनाई होगी। अच्छा तो—

तू चलती चल, मैं अभी आऊं।
हुक्का, तम्बाकू पी आऊं।
बच्चों को रोटी दे आऊं।
दो-दो बातें करता आऊं।
नीम छांव में सुस्ता आऊं।

चिड़िया चली गई। दिन भर खूब मेहनत से काम किया। खेत पूरा जुत चुका था लेकिन कौए ने अभी तक खबर नहीं ली। थकी-मांदी चिड़िया संध्या को घर लौटी। घर का काम

धंधा किया। बाल-बच्चों को दाना-पानी दिया। चिड़िया काफी थक चुकी थी, शीघ्र सो गई।

सवेरा हुआ। चिड़िया कौए के पास गई और बोली—कौए भाई, खेत जुत चुका है। सायंकाल तक तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही, लेकिन तुम नहीं आए। अच्छा हो, अगर हम तुम दोनों आज मिलकर खेत बो दें।

कौए ने कहा—हां ठीक है दीदी, मुझे दुःख है मैं कल न आ सका, घर के ही काम-धंधों में सब समय चला गया—इतना कह कर उसने उपर्युक्त गाना दुहरा दिया।

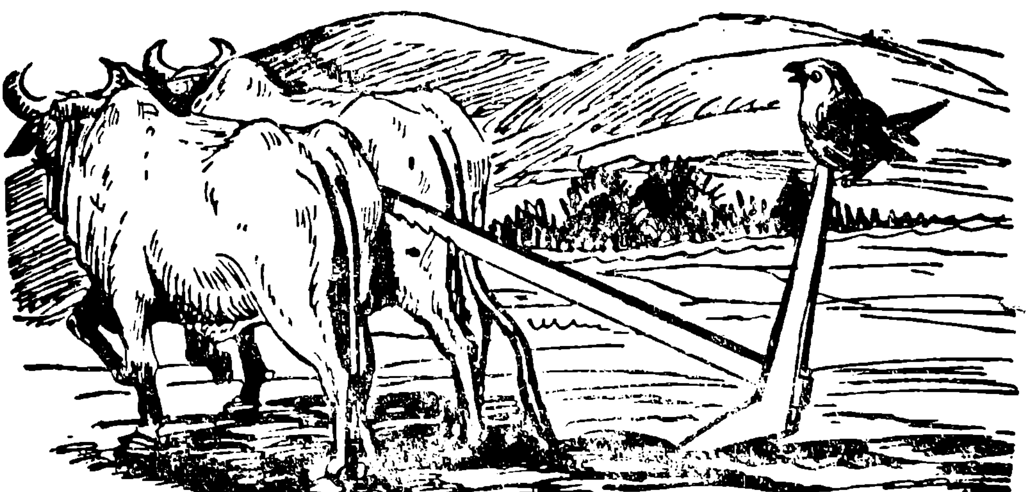
चिड़िया चली गई। उसने खेत पर खूब मेहनत से कार्य किया। सांयकाल तक गेहूं पूरा बोया जा चुका था। लेकिन कौए ने कोई खबर नहीं ली। कार्य से छुट्टी पा वह घर आ गई। बाल-बच्चों को दाना-पानी दिया। बच्चों को सुला कर फिर खुद भी सो गई।

सवेरा हुआ। चिड़िया घर से आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर कौए के पास पहुंची और बोली—भाई, गेहूं भी बोया जा चुका है। तुम्हारी प्रतीक्षा के बाद सब कार्य मुझे ही समाप्त करना पड़ा।

खैर कुछ अर्से कार्य यों ही चलता रहा। गेहूं बड़ा हो गया। चिड़िया कौए से बोली—गेहूं बड़ा हो गया, चलो उसे नला आएं, नहीं तो गेहू के पौधे कमजोर पड़ जाएंगे।

चिड़िया को कौए का वही मीठा उत्तर मिला—

तू चलती चल, मैं अभी आऊं।
हुक्का, तम्बाकू पी आऊं।
बच्चो को रोटी दे आऊं।
दो-दो बातें करता आऊं।
नीम छांव में सुस्ता आऊं।



चिड़िया ने दिन भर खूब मेहनत से काम किया।

चिड़िया खेत पर चली गई। सांयकाल तक खेत की घास साफ की। कौए की प्रतीक्षा के बाद वह घर आ गई। बच्चों की देख-भाल की, दाना-पानी दिया। सब को सुला कर खुद सो गई।

एक दिन चिड़िया ने कौए से फिर कहा—कौए भाई ! गेहूं अब पक चुका है, चलो दोनों मिलकर काट लें। लेकिन चालाक कौआ उसके सुझाव को कब मानने वाला था ? उसने फिर पुराना गीत दुहरा दिया।

चिड़िया ने खेत पर खूब मेहनत से कार्य किया ? लेकिन निकम्मा कौआ फिर भी न गया।

चिड़िया कठिन परिश्रम के पश्चात घर लौटी। नित्य कार्यों से छुट्टी पा वह सो गई।

सवेरे चिड़िया ने कौए से कहा—भाई कौए, अनाज कट चुका है और अब गहाई करनी है आज हम दोनों मिलकर इस कार्य को कर डालें। वर्षा समीप है, देखो, कैसे काले-काले बादल आकाश पर छाए हैं। ऐसा न हो नुकसान,उठाना पड़े।

कौए ने सदा की भांति मीठे स्वर में उत्तर दिया—हां ! हां!ठीक है अवश्य इस कार्य को आज ही कर डालना है। तू चलती चल......।

यह सुन चिड़िया खेत पर चली गई। दिन भर का कार्य समाप्त किया। गहाई हो चुकी। अनाज और भूसा दोनों की अलग-अलग ढेरियां लगा दी गईं।

तत्पश्चात चिड़िया घर चली आई। फिर नित्य कार्य से निवृत्त होकर वह सो गई।

सवेरे शीघ्र उठ वह कौए के पास गई और बोली—भाई कौए, आज बंटवारे का दिन है, कम से कम बंटवारे में तो शामिल हो जाओ।

कौआ बोला—हां-हां ! ठीक है दीदी, चलो—और शीघ्रता से कौआ उड़कर खेत पर जा पहुंचा। और गेहूं की ढेरी पर जा बैठा।

चिड़िया जब वहां पहुंची तो हैरान थी। समस्या बड़ी विकट थी। कौआ किसी प्रकार भी अनाज की ढेरी से उठने के लिए तैयार नहीं था। चिड़िया को कोई युक्ति समझ में नहीं आई और शीघ्रता से घर वापस आ गई। वह हैरान थी कि आखिर कौए ने ऐसा क्यों किया। उसके साथ अब कैसा व्यवहार करना चाहिए।

लेकिन विधाता को कुछ और ही मंजूर था। कौए की दुष्टता उससे छुपी नहीं थी।

उस रात्रि को बड़े जोरों से वर्षा आई और ओले गिरे।कौआ सिकुड़ कर गेहूं की ढेरी पर ढेर हो गया। दुष्ट को अपनी करनी का फल मिला।

चिड़िया ने सवेरे अपना सब अनाज और भूसा इकट्ठा कर लिया और आराम से रहने लगी।

पांच किताबी पंडित

एक बार एक राजा के दरबार में पांच पंडित आए। पांचों बड़े विद्वान थे, परन्तु अपने-अपने शास्त्र में। उनमें से एक कुशल तर्कशास्त्री था, तो दूसरा वैयाकरण। तीसरा गाने-बजाने में कुशल था, तो चौथा ज्योतिषशास्त्र में पारंगत। पांचवा वैद्यक शास्त्र में प्रवीण था।

अपनी विद्या की चमक दिखाकर राजा से धन प्राप्त करने वे एक दिन दरबार में आए। उनके प्रमाणपत्र तथा प्रशंसापत्र देखकर राजा बड़ा खुश हुआ। राजा सोच में पड़ गया कि इन विद्वानों का सत्कार कैसे किया जाए। राजा ने अपने प्रधान मंत्री की ओर देखा। उनका मंत्री बड़ा चतुर था। उसने राजा की अड़चन जान ली और राजा के कान में कहा—महाराज उन्हें कह दें कि कल खुद रसोई बनाकर भोजन कर दरबार में हाजिर हों......।

इस तरह की विचित्र सलाह सुनकर राजा आश्चर्य में पड़ा। उसने प्रधान मंत्री से कहा—तुम पागल तो नहीं हुए? इतने बड़े पंडितों से रसोई बनाने को कहें?

—हां, इसमें क्या हर्ज है?—प्रधान मंत्री ने उत्तर दिया।



मंत्री ने कहा—महाराज! इन्हें कह दें कि कल स्वयं रसोई बनाकर भोजन कर दरबार में हाजिर हों।

—उनकी परीक्षा तो होगी नहीं, बल्कि हमें ही लोग भला-बुरा कहेंगे।

—उसकी चिंता आप न करें। मैं देख लूंगा। आप वैसी आज्ञा दें।

राजा को अपने मंत्री की चतुरता पर काफ़ी भरोसा था। राजा ने वैसा ही हुक्म दिया। पंडितों को ठहरने के लिए एक बड़ी हवेली दी गई।

दूसरे दिन सुबह ये पांचों पंडित रसोई बनाने की तैयारी में लगे। उनमें से प्रत्येक ने एक-एक काम अपने-अपने ज़िम्मे लिया। तर्कशास्त्री घी लाने बाज़ार गया। एक बर्तन में घी लेकर घर लौटने लगा। घर आते समय उसके मन में आया कि इस बर्तन का आधार घी है या घी का आधार बर्तन? 'पात्रात् घृतं वा घृतात् पात्रं !' यह संदेह उसके मन में उत्पन्न हुआ। वह था तर्कशास्त्र का पंडित ! प्रत्येक विषय में तर्क कर बैठना ही उसकी आदत थी ! उसने काफ़ी तर्क किया, लेकिन कुछ निश्चय न कर सका। आखिर उसने घर पहुंचने पर ही निर्णय करने का विचार किया। घी का आधार बर्तन या बर्तन का आधार घी, इसे देखने के लिए उसने बर्तन उल्टा तो घी ज़मीन पर गिर गया।

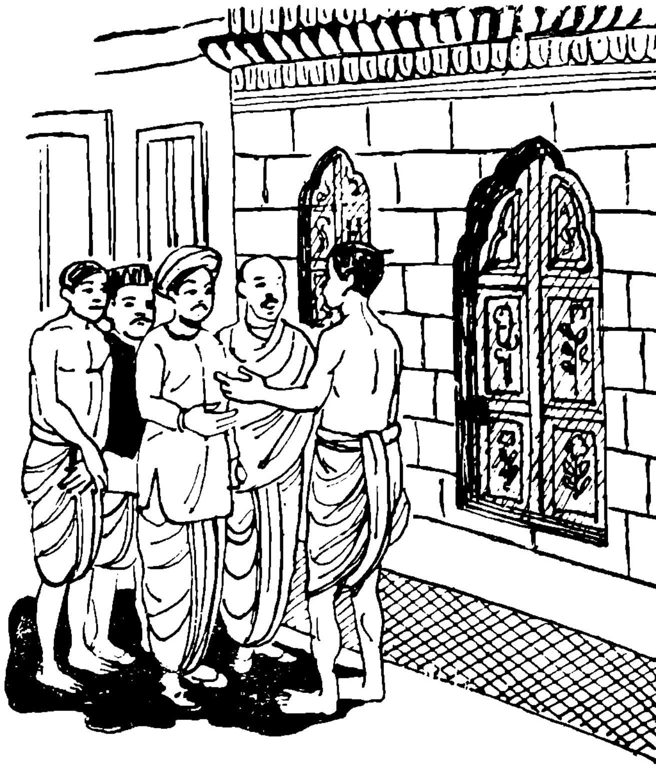
दूसरा पंडित था व्याकरण का विद्वान। बाज़ार से दही लाने का काम उसका था। वह बाजार में गया। बाजार में दही बेचने वाली 'थईर-ओ-थईर-ओ' कहकर चिल्ला रही थी। तेलुगु भाषा में 'थईर' का अर्थ है दही। 'थईर-ओ' व्याकरण की दृष्टि से गलत उच्चारण था, जिसे सुनकर इस वैयाकरण का सिर भड़क गया। उसने उस स्त्री को खरी-खोटी सुनाई, वह स्त्री भी भड़क गई। दोनों में झगड़ा हुआ। आखिर उस स्त्री को इतना गुस्सा आया कि उसने दही का मटका वैयाकरण के सिर पर दे मारा। मटके के टुकड़े-टुकड़े हो गए और उस पंडित का दधि-स्नान हो गया। पंडित वहां से भागा और दही लिए बिना लौट आया।

गाने-बजाने में जो कुशल था, उसके पास चावल पकाने का काम था। चूल्हे पर 'रट-रट' कर चावल पकने लगे तो पंडित को भी गाने की सूझी। उसे लगा जैसे चावल ताल दे रहे हैं परंतु चावल एक सरीखा 'रट-रट' थोड़े ही करेंगे ? वह कुछ देर बाद 'खद-खद' आवाज करने लगे। पंडित को लगा कि 'खद-खद' आवाज से ताल भंग हो रही है। ताल भंग देखकर कौन गवैया चुप बैठेगा ? उसने क्रोध के मारे उस बर्तन पर जोर से एक थप्पड़ लगाया। फिर क्या था, बर्तन चूल्हे से दूर जा गिरा और पके हुए चावल जमीन पर बिखर गए।

चौथे पंडित थे ज्योतिषी महाशय ! भोजन के लिए पत्ते लाने का काम था उनका। वह प्रातःकाल उठकर घर से निकले। गांव के बाहर बरगद का एक पेड़ था, वह वहां पहुंचा। पत्ते तोड़ने पेड़ पर चढ़ने लगा। आधा चढ़ा था कि न मालूम कहां से छिपकली ने 'चुक-चुक' किया। पंडित सोचने लगा, 'बड़ा बुरा सगुन हुआ। आगे चढ़ें या न चढ़ें। आखिर नीचे उतरने का निर्णय किया और नीचे उतरने लगा। नीचे उतर ही रहा था कि छिपकली ने दुबारा 'चुक-चुक' किया। अब नीचे उतरना भी ठीक नहीं, बीच में ही लटक गया। ऐसे कितने समय तक लटका रहता ? उसके हाथ दर्द करने लगे और वह नीचे गिर पड़ा। गिरने से चोट लगी और वह मुश्किल से घर पहुंचा।

अब रह गया पांचवां पंडित। उसका काम था तरकारी लाने का। वह था वैद्यक शास्त्र में पारंगत। वह बाजार में तो गया, परंतु इसका निश्चय न कर सका कि कौन-सी तरकारी

आरोग्य के लिए लाभदायक है वैद्यक शास्त्रानुसार उस मौसम में खाने योग्य तरकारी न मिलने के कारण वह कुछ भी न खरीद कर घर लौट आया।



पांचों किताबी पंडित दुखी और निराश होकर दरबार से निकल गए।

इससे हुआ यह कि भोजन का समय हुआ, परंतु उन्हें भोजन न मिल सका। दरबार में हाजिर होने का समय हुआ। तब वे भूखे तथा उदास वहां पहुंच गए।

इधर उस चतुर प्रधान मंत्री ने यह देखने के लिए आदमी नियुक्त किए थे कि पांचों पंडित क्या-क्या करते हैं। उन्होंने सारी खबर प्रधान मंत्री को दी तथा प्रधान मंत्री ने सारी कथा राजा को सुनाई।

दरबार में आए हुए उन पांचों पंडितों को देखकर राजा को दुःख हुआ। राजा ने पंडितों से कहा—कल मैं तुम्हारी विद्या से काफी संतुष्ट था, परंतु आज मुझे मालूम हुआ कि तुम्हें व्यवहार-ज्ञान बिल्कुल नहीं है। पहले व्यवहार सीखो और फिर मेरे दरबार में धन के लिए आओ।

पांचो किताबी पंडित दुःखी होकर दरबार से निकल गए।

चैंऊं-मैंऊं

एक बकरी थी। उसके चार बच्चे थे। एक का नाम था आले, दूसरे का नाम था बाले, तीसरे का चेंऊं और चौथे का मैंऊं। जब बकरी जंगल में चरने जाती थी, तो अपने घर के दरवाजे से टट्टी लगा जाया करती थी। उसे डर था कि कहीं किसी दिन भेड़िया या और कोई जंगली जानवर उसके बच्चों को मार कर न खा जाए। जब वह शाम को घर लौट कर आती तो दरवाजे के पास खड़ी होकर कहती—आले टट्टी खोल, बाले टट्टी खोल, चेंऊं टट्टी खोल, मेंऊं टट्टी खोल।

अपनी मां की आवाज पहचान कर बच्चे टट्टी खोल देते थे और बकरी भीतर घुस जाती थी।

एक दिन एक भेड़िया झाड़ी की आड़ में खड़ा-खड़ा यह सब तमाशा देख रहा था। उसने अपने मन में सोचा कि अगर मैं भी दरवाजे पर जाकर इसी प्रकार कहूं तो बच्चे टट्टी जरूर खोल देंगे। फिर मैं भीतर घुस जाऊंगा और सबको मार कर खा जाऊंगा।



बकरी ने दरवाजे पर आवाज लगाई—आले टट्टी खोल, बाले टट्टी खोल, चेंऊं टट्टी खोल, मैंऊं टट्टी खोल।

दूसरे दिन बकरी रोज की तरह बच्चों को दूध पिला कर और दरवाजे से टट्टी लगा कर जंगल में चरने चली गई। उसके जाने के थोड़ी ही देर बाद भेड़िया आया और दरवाजे के पास खड़ा होकर बोला—आले टट्टी खोल, बाले टट्टी खोल, चेंऊं टट्टी खोल, मेंऊं टट्टी खोल। बच्चों ने समझा कि आज शायद हमारी मां हमसे कुछ कहना भूल गई है, इसलिए लौट आई है। उन्होंने तुरंत टट्टी खोल दी। टट्टी खुलते ही भेड़िया अंदर घुस गया और एक-एक करके चारों बच्चों को खा गया! जब भेड़िया वहां से गया, तो टट्टी दरवाजे में ठीक उसी तरह से लगा गया। जिस तरह से बकरी लगाया करती थी।

शाम को जब बकरी घर लौटी तो उसने रोज की तरह दरवाजे पर आवाज लगाई—आले टट्टी खोल, बाले टट्टी खोल, चैंऊं टट्टी खोल, मैंऊं टट्टी खोल। परंतु टट्टी कौन खोलता ? बच्चे तो भेड़िये के पेट में थे। बकरी ने फिर चिल्ला कर कहा—आले टट्टी खोल, बाले टट्टी खोल, चैंऊं टट्टी खोल, मैंऊं टट्टी खोल, पर टट्टी नहीं खुली। तब तो बकरी को बड़ी चिंता हुई। तरह-तरह के विचार मन में उठने लगे। भय और घबराहट से थर-थर कांपने लगी। मन में सोच रही थी, आज निश्चय ही भेड़िया मेरे बच्चों को खा गया। उसने बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ कर टट्टी में अपने सींग गड़ा दिए और और टट्टी एक तरफ को गिर गई ! परंतु बकरी जब भीतर घुसी, तो देखती क्या है कि घर खाली है वहां एक भी बच्चा नहीं है। यह देख कर बकरी को बहुत दुःख हुआ। वह समझ गई कि जरूर भेड़िया मेरे बच्चों को खा गया है। बकरी घर के एक कोने में बैठ गई और धाड़ें मार-मार रोने लगी—

हाय ! मेरे आले-बाले !
हाय ! मेरी आंखों के तारे !
हाय ! मेरे चैंऊं-मैंऊं !
तुम बिना कैसे मैं अब जीऊं !

बकरी यह कहती हुई बाहर को दौड़ी—कहां है रे भेड़िया ? मेरे बच्चों को खानेवाले, आजा, तेरा पेट फोड़ूंगी। वह दुःख से व्याकुल थी। रुदन करती हुई इधर-उधर दौड़ने लगी। फिर घर में आ गई और थोड़ी देर चुपचाप बैठी रही। इसके बाद वह उठी और सीधी बढ़ई के घर गई। बढ़ई से बोली—ऐ बढ़ई ! अगर तू मेरे सींग को पैना कर दे, तो मैं तुझे एक थन का दूध पिला दूंगी।

बढ़ई ने रेती से रेत कर बकरी के सींगों को पैना कर दिया और बकरी ने उसे एक थन का दूध पिला दिया।

इसके बाद बकरी तेली के घर गई और उससे बोली— ऐ तेली ! अगर तू मेरे सींगो को चिकना कर दे, तो मैं तुझे एक थन का दूध का पिला दूंगी।

तेली ने तेल चुपड़ कर सींगों को चिकना कर दिया और बकरी ने उसे दूसरे थन का दूध पिला दिया।

अब बकरी वहां से चली और सीधी तालाब पर पहुंची। तालाब के किनारे वह एक ऊंचे टीले पर बैठ गई। थोड़ी देर बाद एक खरगोश तालाब में पानी पीने आया। बकरी ने खरगोश को डांटते हुए कहा—ऐ खरगोश ! ऐ खरगोश पानी न पीना।

खरगोश बोला— क्यों ? बकरी ने कहा—तू ने ही मेरे आले खाए, तू ने ही मेरे बाले खाए, तू ने ही मेरे चैंऊं खाए, तू ने ही मेरे मैंऊं खाए।

खरगोश ने उत्तर दिया— न मैंने तेरे आले खाए, न मैंने तेरे बाले खाए, न मैंने तेरे चैंऊं खाए, न मैंने तेरे मैंऊं खाए। मुझे पानी पी लेने दे।

बकरी ने कहा—अच्छा, पी ले।

जब खरगोश पानी पीकर चला गया तो गीदड़ आया। बकरी ने गीदड़ को भी पानी पीने से रोक दिया और उससे भी यही कहा—तूने ही मेरे आले खाए, तूने ही मेरे बाले खाए, तूने ही मेरे चेंऊं खाए, तूने ही मेरे मेंऊं खाए।

गीदड़ ने भी कहा—न मैंने तेरे आले खाए, न मैंने तेरे बाले खाए, न मैंने तेरे चेंऊं खाए, न मैंने तेरे मेंऊं खाए। इस पर बकरी ने उसको भी इजाजत दे दी।

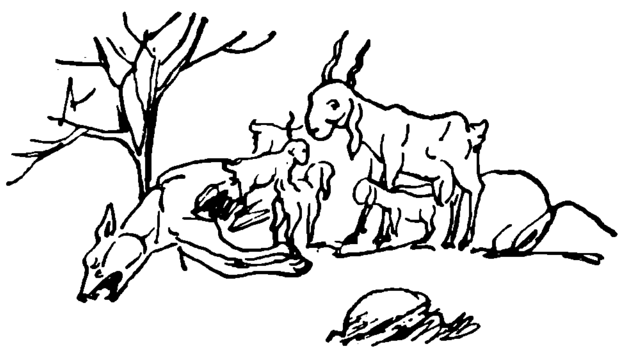
जब गीदड़ पानी पीकर चला गया, तो वही भेड़िया आया, जिसने बकरी के बच्चे खाए थे। बकरी ने भेड़िये को रोक कर कहा—ऐ भेड़िये! ऐ भेड़िये! पानी न पीना।

भेड़िये ने पूछा—क्यों?

बकरी ने कहा—तूने ही मेरे आले खाए, तूने ही मेरे बाले खाए, तूने ही मेरे चेंऊं खाए, तूने ही मेरे मेंऊं खाए।

भेड़िया बोला—न मैंने तेरे आले खाए, न मैंने तेरे बाले खाए, न मैंने तेरे चेंऊं खाए, न ही मैंने तेरे मेंऊं खाए। मुझे पानी पी लेने दे।

बकरी ने कहा—अच्छा, पी ले।



भेड़िये का पेट फट गया और उसमें से चारों बच्चे निकल पड़े।

जब भेड़िया पानी पीकर चला, तो बड़े घमंड के साथ बोला—मैंने ही तेरे आले खाए, मैंने ही तेरे बाले खाए, मैंने ही तेरे चेंऊं खाए, मैंने ही तेरे मेंऊं खाए। कर, तू मेरा क्या करेगी?—यह कह कर भेड़िया मस्तानी चाल से वहां से चला गया और एक झाड़ी में जाकर सो गया। बकरी अपने टीले से नीचे उतरी और जिधर भेड़िया गया था उधर ही चल पड़ी। भेड़िये के पैरों के निशान जमीन पर बने हुए थे। उन्हीं निशानों के सहारे बकरी उस झाड़ी के पास पहुंची, वहां भेड़िया घनी और शीतल छाया में आराम कर रहा था। बकरी ने देखा कि भेड़िया अचेत सोया पड़ा है। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी और अपने दोनों पैने सींग उसके पेट में घुसेड़ दिए। भेड़िये का पेट फट गया और उसमें से चारों बच्चे निकल पड़े। उनको गोदी में उठा कर बकरी खूब रोई और बार-बार उनका मुंह चूमने लगी। बच्चे अपनी मां से मिल कर सब दुःख भूल गए। बच्चों को पेट भर दूध पिला कर बकरी उन्हें अपने साथ घर ले आई। बच्चे घर आकर खुशी से किलोलें करने लगे।

पिटपीं राजा



पिटपीं राजा ने कहीं जहांगीर की घंटी का नाम सुना तो उसने
भी अपने कुएं पर एक घंटी लटकवा दी।

जंगल में एक तालाब था। तालाब में बहुत से मेंढक रहते थे। तालाब के पास एक कुआं था। उसमें मेंढकों का राजा रहता था। राजा का नाम था 'पिटपीं राजा'। पिटपीं राजा पूरा मक्खीचूस था।

एक दिन मेंढकों ने सभा की। सबने बैठ कर विचार किया कि 'हम सब लोग पिटपीं राजा का मान करते हैं, दावत देते हैं, लेकिन पिटपीं राजा हमें कभी दावत नहीं खिलाते। कभी हमें अपने घर पर नहीं बुलाते। क्या करना चाहिए ?

एक ने कहा—सत्याग्रह करना चाहिए।

दूसरे ने कहा—राजा को गद्दी से उतार दिया जाए।

इतने में एक छोटा-सा मेंढक जिसका नाम था 'टर्रकटूं'। उछल कर सामने आया और बोला—सुनो जी ? राजाओं से मिलकर चलना चाहिए। उन्हें गद्दी से नहीं उतारना चाहिए। मैं तरकीब से काम लूंगा। पिटपीं राजा नाराज भी न होंगे और हमें दावत भी मिल जाएगी।

सब मेंढकों ने 'टर्रकटूं' की बात मान ली। सभा समाप्त हुई।

पिटपीं राजा कंजूस तो थे ही साथ ही ढोंगी भी पक्के थे। कहीं जहांगीर की घंटी का नाम सुना तो उसने भी अपने कुएं पर एक घंटी लगा दी, और नीचे एक कागज पर लिख कर टांग दिया—

मेंढक मल जी पिटपीं राजा,
इसी कुएं में रहते हैं।
मिलना हो तो बजे घुंटुली,
घंटी बजते आते हैं।

'टर्रकटूं' जी सभा से उठ कर सीधे पिटपीं राजा के कुएं पर पहुंचे। आपने पहला कागज फाड़ कर फेंक दिया। अपना दूसरा कागज वहां लगा दिया। उस पर लिख दिया—

'मेंढक मल जी पिटपीं राजा,
आज हो गए हैं बीमार।
ठीक अगर करना चाहो तो,
डालो कड़वी गोली चार।'



टर्रकटूं ने दूसरा कागज वहां लगा दिया।

तालाब के मेंढकों ने नया कागज पढ़ा। मेंढकों को क्या मालूम कि यह सब करामात 'टर्रकटूं' की है। मेंढकों ने 'कुनैन' की कड़वी गोलियां ला-ला कर कुएं में डालनी शुरू कीं। कुएं का पानी कड़वा हो गया। पिटपीं राजा घबड़ाए। मन में सोचने लगे 'आज यह मेंढकों को क्या सूझा है? क्या इन्होंने भी आजादी की लड़ाई शुरू कर दी?' पिटपीं राजा बाहर आए। बाहर आकर नया कागज पढ़ा। उन्होंने नया कागज तो फाड़ दिया। अपना पुराना कागज़ फिर लगा दिया और बड़बड़ाते हुए कुएं में चले गए।

टर्रकटूं पास ही छिपे बैठे थे। उछलते-उछलते आए। पिटपीं राजा का कागज़ फाड़ दिया। अपना नया कागज़ लगा दिया।

'मेंढक मल जी पिटपीं राजा,
गोली खाकर ठीक हुए।
आज खुशी में दावत खाओ,
घर वालों को लिए हुए।'

तालाब के मेंढकों ने नया कागज़ पढ़ा। कागज़ में दावत की बात पढ़ कर सभी मेंढक उछलने लगे। उछलते-उछलते घर गए। घर से बीबी बच्चों को लेकर पिटपीं राजा के कुएं पर पहुंचे। कुएं की घंटी बजाई गई। पिटपीं राजा बाहर आए। सब मेंढको को देख कर पिटपीं राजा ने पूछा—कहिए क्या बात है ?

मेंढक बोले—दावत में कितनी देर है ?

पिटपीं राजा ने हैरान होकर पूछा—कैसी दावत ?

मेंढकों ने कुएं पर लगा नया कागज दिखाया। पिटपीं राजा ने सिर झुका लिया, मन में सोचने लगे, आजकल प्रजा की ताकत बढ़ रही है। राजाओं से राज्य छीने जा रहे हैं। एक दावत खिला देने से अगर गड़बड़ रुक जाए, तो ठीक ही है। ऐसा सोच कर पिटपीं राजा बोले—आइए ! आप लोग अंदर आइए। दावत में देर नहीं है।

पिटपीं राजा ने नया कागज़ फाड़ दिया। अपना पुराना कागज़ फिर लगा दिया। टर्रकटूं पास ही छिपे बैठे थे। उछलते-उछलते आए। पिटपीं राजा का कागज फाड़ दिया अपना नया कागज फिर लगा दिया—

'सारे मेंढक दावत खाकर, सौंफ सुपारी फांक रहे।
भूखे प्यासे टर्रकटूं जी बैठे-बैठे झांक रहे।।'

दावत खाकर मेंढक बाहर आए। पीछे से पिटपीं राजा भी आए। ऊपर आकर एक दूसरा नया कागज लगा हुआ देखा। पिटपीं राजा लाल-पीले होने लगे। पर नया कागज पढ़ते ही खुश हो गए। दौड़ कर नटखट टर्रकटूं को गले से लगा लिया। पिटपीं राजा बोले—टर्रकटूं जी ! चलिए आज तो आप मेरे साथ ही एक थाली में खाना खाएंगे। आज आपने हमें नया पाठ पढ़ाया है कि राजा को भी प्रजा का मान करना होगा। प्रजा से मिलजुल कर ही रहना होगा।

एक प्रहार सात मार

एक दर्जी ने बाजार से मिठाई लाकर बिना ढके हुए अपने कमरे में रख दी और अपना काम करना शुरू कर दिया। थोड़ी देर में क्या देखता है कि बहुत-सी मक्खियां मिठाई पर आकर बैठ गई हैं। दर्जी ने जोर से मिठाई पर हाथ मारा जिससे सात मक्खियां मर गईं। दर्जी मन ही मन बड़ा खुश होने लगा कि मैंने एक ही बार में सात की हत्या कर दी है। खुशी से फूला न समाया।

उसने अपना काम छोड़ दिया और एक बक्स बना लिया जिसके ऊपर लिखा था, 'एक प्रहार सात मार'। इसी बक्स में उसने एक कबूतर और एक पनीर का टुकड़ा रख दिया। बक्स को गले में लटकाए वह बाजार में चल पड़ा। शाम का समय हो गया था। जो भी आदमी उसे देखता, बड़ा हैरान हो जाता कि यह कितना बहादुर है जिसने एक बार में सात को मार डाला।

उसी देश में एक और भी बहादुर नौजवान रहता था। जब यह बात उस नौजवान के कानों में पहुंची तो वह भागता हुआ दर्जी के पास आया और उस नौजवान ने दर्जी से शर्त लगाई कि हम दोनों पत्थर फेंक कर देखते हैं कि किसका पत्थर देर में नीचे गिरता है। दर्जी ने यह शर्त मंजूर कर ली। पहले नौजवान की बारी थी जो उससे मुकाबला करने के लिए आया था। उसने पत्थर को फेंका जो दो मिनट के बाद नीचे आ गया। जब दर्जी की बारी आई तो उसने एक दम से अपने बक्से में से कबूतर निकाल कर इस चालाकी से ऊपर फेंका कि नौजवान समझा कि यह पत्थर है। नौजवान देखने लगा कि कब पत्थर नीचे आए। लेकिन वह तो कबूतर था, वह कब नीचे आने वाला था ?

दर्जी ने कहा—मैं इतना बहादुर हूं कि मेरा फेंका हुआ पत्थर नीचे नहीं आएगा। दर्जी ने अपनी बड़ाई करने के लिए नौजवान से कहा—मैं पत्थर से पानी भी निकाल देता हूं !

नौजवान ने पूछा—वह कैसे ?

दर्जी ने कबूतर फेंकते हुए पनीर को मिट्टी में फेंक दिया था। अब उसमें काफी मिट्टी लग गई थी और वह बिल्कुल पत्थर के समान लग रहा था। दर्जी ने उसी पनीर को जमीन से उठाया और उसे जोर से दबा कर बड़े मजे से उसमें से पानी निकाल दिया। फिर क्या था, नौजवान ने उसकी खूब प्रशंसा की। लोग उसे फूलों के हार चढ़ाने आते, अपने घर बुलाते और अब दर्जी का बड़ा आदर-सत्कार होने लगा।

उस देश का राजा बड़ा चिन्तित रहा करता था, क्योंकि उस देश के जंगल में दो राक्षस रहते थे जो रोज एक आदमी को पकड़ कर ले जाते थे, और मार कर खा जाते थे। राजा हमेशा यही सोचता रहता था कि क्या मेरे देश में कोई ऐसा बहादुर नहीं है, जो इन राक्षसों को मार दे ?

दर्जी की बहादुरी की प्रशंसा राजा के कानों तक भी पहुंची। राजा ने दर्जी को बुलाया,



दर्जी ने पत्थर एक राक्षस के ऊपर दे मारा।

उसका आदर सत्कार किया और दर्जी को उन दोनों राक्षसों को मारने के लिए कहा। पहले तो दर्जी ने इन्कार-सा किया। लेकिन फिर राजा ने कहा—मैं तुम्हें एक गांव दे दूंगा। और यदि तुम चाहो तो मेरी सेना भी ले जा सकते हो।

दर्जी ने कुछ सोचने के बाद कहा—मुझे सेना की आवश्यकता नहीं, मैं अकेला ही काफी हूं।

रात के समय दर्ज़ी जंगल की ओर चल पड़ा। दर्जी ने जेब में दो बड़े से पत्थर डाल लिए और उस वृक्ष के ऊपर चढ़ कर बैठ गया जिसके नीचे दोनों राक्षस सो रहे थे।

ऊपर जाते ही दर्जी ने एक पत्थर एक राक्षस के ऊपर दे मारा। राक्षस उठा और उसने इधर-उधर देखा, उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। राक्षस ने अपने दूसरे साथी को उठा कर पूछा—क्यों तूने मुझे पत्थर मारा है?

दूसरे राक्षस ने उत्तर दिया—नहीं भाई, मैंने नहीं मारा है।

पहले ने कहा—और किसने मारा है?

दूसरे ने कहा—अब मुझे माफ भी कर दो।



गांव आकर दर्ज़ी अपनी पत्नी को भी ले आया।

दोनों सो गए। अब दर्जी ने दूसरा पत्थर दूसरे राक्षस पर दे मारा। दूसरा राक्षस उठा और उसने पहले वाले राक्षस को उठा कर मारना शुरू कर दिया और कहा—मैंने तो तुम्हें पत्थर नहीं मारा था, लेकिन तुमने मेरे से बदला लेने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पहला राक्षस दूसरे राक्षस को दोषी कहता, दूसरा राक्षस पहले को। दोनों लड़ने लगे। राक्षस थे, भला उनमें सोचने की शक्ति कहां थी। दोनों लड़े और इतना लड़े कि उन्होंने एक-दूसरे को ने इसी भ्रम में नष्ट कर दिया और मृत्यु की गोद में सो गए।

दर्जी वापस लौटा और राजा को यह समाचार सुनाया। राजा उस पर बड़ा खुश हुआ और दर्जी को एक गांव इनाम में दे दिया।

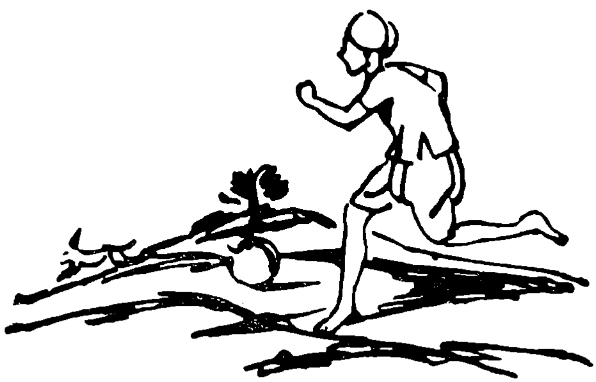
अब वह दर्जी अमीर बन गया। गांव आकर दर्जी अपनी पत्नी को भी ले गया। अब वह बहुत सुखी था।

घोड़े का अंडा

एक बार एक मूर्ख जुलाहा शहर में घूमने के लिए गया। वहां उसने एक दुकान के सामने तरबूजों का ढेर लगा हुआ देखा। जुलाहे ने पहले कभी तरबूज नहीं देखे थे, इसलिए उसने उन्हें देखकर सोचा कि ये किसी चिड़िया के अंडे हैं। फिर उसने सोचा कि चिड़िया के अंडे तो इतने बड़े हो नहीं सकते, इसलिए अवश्य ही घोड़े के अंडे हैं। उसने दुकानदार से पूछा—क्या यह घोड़े के अंडे हैं ?

यह सुनकर पहले तो दुकानदार चौंका, पर बाद में उसने सोचा कि यह मूर्ख है, इसलिए वह बोला—हां, ये घोड़े के अंडे ही हैं। उस गंवार ने उनका दाम पूछा तो दुकानदार ने एक तरबूज का दाम बीस रुपये बताया। जुलाहे ने एक तरबूज खरीद लिया और अपने घर की ओर चल पड़ा। वह सोचता जा रहा था, 'इस अंडे को मैं अपने घर के एक गर्म स्थान में रख दूंगा। कुछ दिन बाद इसमें से एक घोड़े का बच्चा निकलेगा। जब वह बड़ा हो जाएगा तो उसे बेचकर और अधिक अंडे खरीदूंगा और फिर उनके बच्चे बेच-बेचकर पैसे कमाऊंगा। तब मैं घोड़ों का व्यापार करने लगूंगा और इस प्रकार अमीर बन जाऊंगा।'

खरगोश को भागते देखकर जुलाहे ने समझा कि अंडे में से निकल कर घोड़े का बच्चा भागा जा रहा है।



चलते-चलते दोपहर हो गई। वह एक तालाब के पास रुक गया और तरबूज को उसने एक झाड़ी की ओट में कुछ ऊपर रख दिया। वह नहा ही रहा था कि एकाएक तेज हवा के झोंके से तरबूज गिर गया। तरबूज के गिरने की आवाज से डरकर एक खरगोश जो कि झाड़ी में छिपा हुआ बैठा था, बड़ी तेजी से भागा। उसे भागते देखकर जुलाहे ने समझा कि मेरे अंडे में से घोड़े का बच्चा निकल कर भागा जा रहा है। वह उसके पीछे बड़ी तेजी से दौड़ा पर खरगोश जरा-सी देर में आंखों से ओझल हो गया।

अंत में हार मानकर अपने भाग्य को कोसता हुआ वह घर लौटा। तरबूज को बेकार समझ उसने वहीं छोड़ दिया। घर पहुंचते ही उसने औरत से सब हाल कह सुनाया। उसकी

औरत को भी बड़ा दुख हुआ और उसने कहा—यदि तुम घोड़े के बच्चे को यहां ले आते तो मुझे चढ़ने को मिल जाता।

यह सुनकर वह बड़ा गुस्सा हुआ और अपनी स्त्री को पीटते हुए बोला—अरी डायन ! तू छोटे-से घोड़े के बच्चे पर लदकर उसकी पीठ तोड़ डालना चाहती है ? तेरा अढ़ाई मन का बोझ भला छोटा-सा बच्चा संभाल सकता है ?

हल्ला-गुल्ला सुनकर गांव वाले दौड़े हुए आए और पूछने लगे—तू अपनी औरत को इतनी निर्दयता से क्यों पीट रहा है ?

जुलाहा बोला—निर्दय तो यही है, जो एक छोटे-से घोड़े की पीठ तोड़ना चाहती है। और उसने, उनसे सब हाल कह सुनाया।

सब सुनकर गांव वालों ने पूछा—तेरे घोड़े का अंडा कहां है ?

उसने उनको झाड़ी के पास ले जाकर अंडा दिखा दिया। गांव वाले उसकी बेवकूफी पर खूब हंसे। उसमें से एक ने कहा—घोड़े के अंडे कभी नहीं होते। तुम्हें किसी ने ठगा है। आओ, मैं तुम्हें इस अंडे के असली बच्चे दिखाऊं। यह कहकर उसने तरबूज को एक पत्थर पर पटक कर फोड़ दिया और उसके बीज उसे देकर कहा कि यही इसके बच्चे हैं, और तरबूज को गांव वाले बांटकर खा गए।

कंजूस का धन

बहुत दिनों की बात है कि दिल्ली के चांदनी चौक में एक कंजूस सेठ रहता था। उसने सुना कि नई दिल्ली में एक मक्खीचूस बनिया है, जो अपनी कंजूसी के कारण बदनाम है। सेठ करोड़ीमल ने सोचा कि प्रसिद्ध कंजूस की शागिर्दी करनी चाहिए ताकि मैं और अधिक बचत करना सीख जाऊं। यह विचार कर वह नई दिल्ली में उस बनिये के घर पहुंचा।

उसके आने का अभिप्राय जान कर बनिया बड़ा खुश हुआ। वह बनिया बोला—चलो पहले भोजन का सामान बाजार से खरीद लाएं। आज तो आप को बढ़िया-सा खाना खिलाऊंगा। पहला ही दिन है और आप मेरे मेहमान भी ठहरे। उसने एक होटल में जाकर पूछा—क्यों भाई ! खाना कुछ बढ़िया भी है या यूं ही बासी चीजें हैं।

होटल वाला बोला—अजी ! मेरे होटल की बनी हुई रोटी तो मक्खन से भी बढ़ कर ताजी और मजेदार हैं।



बनिया बोला—लीजिए हमें अपने पुराने हिसाब के अनुसार पानी ही पीना पड़ा।

बनिये ने कहा—देखिए, सेठ साहब ! यह अपनी रोटी का मुक़ाबला मक्खन से कर रहा है, क्यों न आज मक्खन जैसी उम्दा चीज से ही पेट भरा जाए ? इसमें बचत भी हो जाएगी और थोड़ा-सा ही खाने से पेट भर जाएगा ।

तब वे मक्खन बेचने वाले के पास गए और पूछा कि उसके पास बढ़िया मक्खन है या नहीं ? दूकानदार बोला—मेरा मक्खन तो बहुत बढ़िया है और तेल से भी निर्मल, स्वादिष्ट और ताजा है ।

बनिये ने करोड़ीमल से कहा—देखिए, मक्खन की तुलना तेल से की जा रही है। क्यों न तेल ही लिया जाए ?

फिर वह तेली के पास गए और उससे तेल के बारे में पूछा । तेली बोला—जनाब, मुझको तो शहर का बच्चा-बच्चा जानता है । मेरा तेल देखिए पानी जैसा शुद्ध है ।

बनिया बोला—लीजिए हमें अपने पुराने हिसाब के अनुसार पानी ही पीना पड़ा । अब हमें पानी पर ही गुज़ारा करना चाहिए । चलिए अब घर चले वहां मैं आपका स्वागत पानी से करूंगा । क्योंकि सब दूकानदारों ने सब चीज़ों से स्वादिष्ट व बढ़िया पानी ही बताया है ।

इस प्रकार खातिर-तवाज़ा का अहसान लादकर सेठ ने केवल पानी पिला कर, सेठ को विदा किया ।

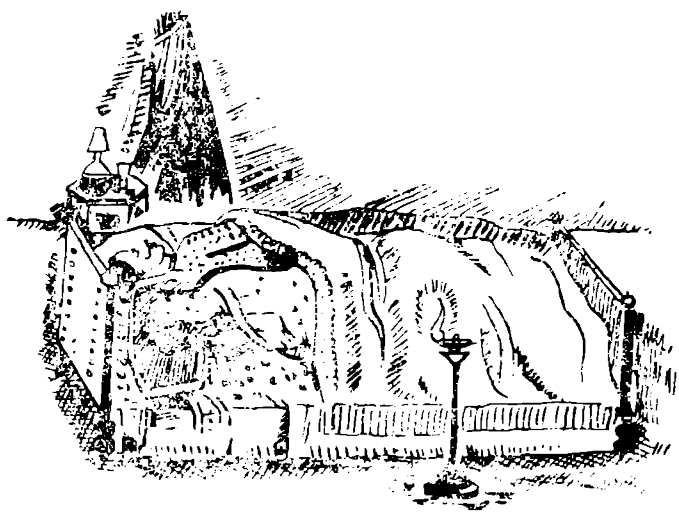
घर लौटकर करोड़ीमल और भी कंजूसी से रहने लगा । एक बार वह बीमार पड़ा, पर उसने अपने इलाज के लिए भी पैसा नहीं खर्चा । अन्त में वह उसी बीमारी से मर गया ।

उसके मरने के बाद उसका धन राजा ने ग़रीबों में बांट दिया । सच है, ऐसे धन से क्या लाभ जिसका मनुष्य सद्व्यय न कर सके ।

सेठानी की चालाकी

बहुत पुरानी बात है। एक नगर में एक कंजूस सेठ रहता था। वह सारे नगर में अपनी कंजूसी के लिए मशहूर था। उसकी सेठानी तो उससे भी अधिक कंजूस-मक्खीचूस थी। लेकिन लेन-देन का बड़ा कारोबार था और वह सूद बहुत कड़ा लेते थे। कभी एक पाई भी खो जाती तो उनको बड़ा दु:ख होता और दोनों रात-दिन कलपते ही रहते थे।

एक दिन मौका पाकर सेठ जी के घर में चोर आ घुसे। सब बेखबर सो रहे थे। चोरों ने सारा घर छान डाला पर कोई कीमती माल उनके हाथ न लगा। अन्त में वे हिम्मत करके उस कमरे में गए जहां सेठ और सेठानी सो रहे थे। सेठजी तिजोरी अपने सिरहाने रखकर सो रहे थे। चोरों ने मन्द प्रकाश में देखा कि सेठ सेठानी गाढ़ी नींद में सो रहे हैं। इधर रात भी बीत रही थी, इस कारण उन्होंने तिजोरी तोड़ने में जल्दी की। हथौड़ी की आवाज़ से सेठजी की नींद खुल गई। वह घबड़ाए और बड़बड़ करने लगे। उनकी बिस्तर से उठने की हिम्मत न हुई। जोर से बोलना भी उनसे न हो सका।



इतनी देर में सेठानी की नींद खुल गई।

इतनी देर में सेठानी की भी नींद खुल गई। उसने आधी मूंदी आंखों से करवट बदली। उसकी नजरों ने कनखियों से देख लिया कि चोर घर में घुस आए हैं। सेठानी बड़ी होशियार थी। वह घबडाई नहीं और रज़ाई को कुछ और ऊपर को सरकाते हुए सेठजी से बोली—

ओह ! अच्छी याद आई। कल आप रामनगर से जो 5,000 रुपये वसूल करके लाए थे, वह मैं रसोई में हंडिया में ही रख आई हूं।

पहले तो सेठ जी बहुत सकपकाए परंतु बाद में सेठानी का मतलब समझ गए और उसे लेटे ही लेटे डांटने लगे—तूने मेरी साल भर की कमाई बरबाद कर दी। इतना समझाया, इतना सावधान किया पर तुझ पर कोई असर ही नहीं होता। तिजोरी खाली रख कर, इधर-उधर रुपया पटकते रहने से क्या मतलब ?

सेठानी बात बनाकर बोली लो तुम तो नाहक को बिगड़ने लगते हो। तिजोरी की तरफ़ तो सबका ध्यान जाता है। हंडिया में रुपया सुरक्षित रहता है। मैं तो कई बार उसी में रुपय।



उनके हाथ डालते ही बिच्छू ने ज़ोर से डंक मारा।

छिपा कर रख दिया करती हूं। किसी को ख्याल भी नहीं होगा कि हमारी पूंजी हंडिया में है। तिजोरी तो दिखावे के लिए रखी हुई है।

चोर यह सब बातें सुन रहे थे। वे बड़े खुश हुए और तिजोरी छोड़कर धीरे-धीरे बरामदे में चले गए। वहां उन्होंने हंडिया में हाथ डाला परंतु उसके अंदर रुपयों के बदले एक ज़हरीला बिच्छू था। उनके हाथ डालते ही बिच्छू ने ज़ोर से डंक मारा। चोर ज़ोर-ज़ोर से हाय ! हाय ! करने लगे। चिल्लाहट सुनकर आस-पास के सब लोग दौड़े आए। तब तक दिन निकल आया था। पुलिस में खबर दी गई और वह चोरों को पकड़ कर थाने में ले गई।

—o—

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार